ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भगों देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार

संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

वर्षः ०३ अंकः ०३

'स्वतंत्र विचारों की साधना

भय और भोग पर विजय पाने के उपरांत ही मनुष्य स्वतन्त्र विचारों की उपासना कर सकता है। तब उसे नैतिक बल बढ़ाना पड़ता है और स्वयं को तपस्या की, कष्ट सहने की आँच में तपने के लिए छोड़ना पड़ता है। तब वह विज्ञापनों के चक्कर में नहीं फंसता बल्कि इन सबसे अपने को ऊपर उठाकर स्वतंत्र विचारों की साधना में अपने को खपा देता है। तब सारे प्रलोभन उसके लिए बेकार हो जाते हैं। संसार तो उसके लिए प्रयोगशाला रहती है, जहाँ वह अपने 'स्व में प्रतिष्ठित रहता है और उसके आगे किसी को कुछ नहीं समझता। जो लोग यह स्वीकार करते हैं कि धन और भय अथवा भोग और भय मनुष्य को स्वतन्त्र विचारों से पृथक नहीं कर सकते, सचमुच ही वे भोले हैं और उनमें अपने दैनिक जीवन को ही एकाग्रतापूर्वक देखने और उनका विश्लेषण करने की शक्ति नहीं है। यदि वे अपने-अपने सिद्धांतों और विचारों के साथ अपने जीवन की तुलना करें तो वे इसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त करेंगे। सच तो यह है कि संयम का पाठ पढ़े बिना तथा सादगीपूर्ण जीवन को अपनाये बिना स्वतन्त्र विचारक बना ही नहीं जा सकता। स्वतन्त्र विचार के लिए इतना बड़ा त्याग सहा नहीं जा रहा है इसीलिए तो आज जीवन में क्रान्ति नहीं हो रही और मानसिक गुलामी में सबके सब जकड़े पड़े हैं।

हृदय से हृदय तक

नवरात्रि पर्व के अवसर पर सुसंस्कारी आत्माएँ अपने हृदयों में समुद्र मंथन जैसी हलचलें उभरती देखती हैं। जो उन्हें सुनियोजित कर सके, वे वैसी ही रत्नराशि उपलब्ध करते हैं जैसी कि पौराणिक काल में उपलब्ध हुई मानी जाती है। इन दिनों परिष्कृत अंतराल में ऐसी उमंगे भी उठती हैं जिनका अनुसरण सम्भव हो सके तो दैवी अनुग्रह पाने का नहीं, देवोपम बनने का अवसर भी मिलता है। यों ईश्वरीय अनुग्रह सत्पात्रों पर सदा ही बरसता है, पर ऐसे कुछ विशेष अवसर भी आते हैं, जिनमें अधिक लाभान्वित होने का अवसर मिल सके। इन अवसरों को पावन पर्व कहते हैं। नवरात्रियों का पर्व मुहूर्तों में विशेष स्थान है। उस अवसर पर देव प्रकृति की आत्माएँ किसी अदृश्य प्रेरणा से प्रेरित होकर आत्म-कल्याण एवं लोकमंगल के क्रियाकलापों में अनायास ही रस लेने लगती हैं।

बसन्त आते ही कोयल कूकती और तितलियाँ फुदकती दृष्टिगोचर होती हैं और भौंरे गूँजते हैं जबकि अन्य ऋतुओं में उनके दर्शन भी दुर्लभ रहते हैं। वर्षा आते ही मेंढक बोलते हैं और मोर नाचने लगते हैं जबकि साल के अन्य महीनों में उनकी गतिविधियाँ कदाचित ही दृष्टिगोचर होती हैं। आँधी तूफान और चक्रवातों का दौर गर्मी के दिनों में रहता है। ग्रीष्म का तापमान बदलते ही उनमें से किसी का पता नहीं चलता। ठीक यही बात नवरात्रियों के समय पर भी लागू होती हैं। प्रातःकाल और सायंकाल की तरह इन दिनों की भी विशेष परिस्थितियाँ होती हैं, उनसे सूक्ष्म जगत के दिव्य प्रवाह उभरते और मानवी चेतना को प्रभावित करते हैं। न केवल प्रभावित करने वाली वरन् अनुकूल उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ भी अनायास ही बनती हैं। नवरात्रियों में कुछ ऐसा वातावरण रहता है जिसमें आत्मिक प्रगति के लिए प्रेरणा और अनुकूलता की सहज शुभेच्छा बनते देखी जाती है। मानव जीवन के पारमार्थिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए तत्वदर्शी ऋषियों, मनीषियों ने नवरात्रि में साधना का अधिक महात्म्य बताया है और इस बात पर जोर दिया है कि अन्य अवसर पर न बन पड़े सही पर नवरात्रि में आध्यात्मिक तप साधना का सुयोग बिठाने का प्रयत्न तो करना ही चाहिए। तंत्र विज्ञान के अधिकांश कौलकर्म उन्हीं दिनों सम्पन्न होते हैं। वाममार्गी साधक अभीष्ट मंत्र सिद्ध करने के लिए इस अवसर की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

नवरात्रि देव पर्व है। उसमें देवत्व की प्रेरणा और दैवी अनुकम्पा बरसती है। जो उस अवसर पर सतर्कता बरतते हैं और प्रयत्नरत होते हैं, वे अन्य अवसरों की अपेक्षा इन शुभ मुहूर्तों का लाभ अधिक ही उठाते हैं। भौतिक लाभों को सिद्धियों के नाम से जाना जाता है। संकटों के निवारण और प्रगति के अनुकूलन में सिद्धियों की आवश्यकता पड़ती है। उस आधार पर जो मिलता है, उसे वरदान कहा जाता है। नवरात्रियाँ वरदानों की अधिष्ठात्री कही जाती हैं, पर इस शुभ अवसर का वास्तविक लाभ है- देवत्व की विभूतियों का जीवनचर्या में समावेश। वह जिसे जितनी मात्रा में मिलता है, वह उतनी ही क्षमता का देवमानव कहलाता है। देवता स्वर्ग में नहीं रहते अपितु महामानवों के रूप में इस धरती पर विचरते हैं। नवयुग देवत्वप्रधान होगा। उसमें वे प्रयत्न चलेंगे जो मनुष्य में देवत्व बसाते हैं। देवताओं का स्थान ही स्वर्ग कहा जाता है। इसी तथ्य के आधार पर यह अपेक्षा की गई है कि उत्कृष्ट व्यक्तियों द्वारा जो सुखद वातावरण बनेगा, उसे धरती पर स्वर्ग के अवतरण की उपमा दी जा सकेगी।

नवरात्रियों की नौ दिवसीय साधना, चौबीस हजार जप का लघु अनुष्ठान के साथ सम्पन्न करनी चाहिए। यदि जप प्रातः पूरा नहीं हो सकता है तो सायंकाल उसे पूरा कर लेना चाहिए। उपासना क्षेत्र में नर-नारी को एक समान अधिकार है। ईश्वर के लिए पुत्र-पुत्री दोनों समान हैं। अनुष्ठान काल में कुछ विशेष तपश्चर्याओं, जैसे- ब्रह्मचर्य, उपवास, अपने कार्य स्वयं करना, निषिद्ध वस्तुओं का उपयोग नहीं करना और आत्मपरक साहित्य के स्वाध्याय के साथ जप पूरा करना पड़ता है और अंत में शतांश आहुतियों का हवन करना चाहिए। पूर्णाहुति के बाद प्रसाद वितरण, कन्या भोजन आदि का प्रबन्ध अपनी सामर्थ्य अनुसार करना उत्तम है। जो उपरोक्त अनुष्ठान नहीं कर सकते वे २४० गायत्री चालीसा का पाठ करके अथवा २४०० गायत्री मंत्र लिख कर भी सरल अनुष्ठान कर सकते हैं।

महान सांस्कृतिक परम्पराओं का पुनर्जीवन और सृजन के अभीष्ट आत्म-ऊर्जा का अभिवर्द्धन तथा जन-जीवन में उत्कृष्टता के समावेश का एक अनुपम अनूठा स्वर्णिम सुयोग यहाँ होने वाले सामूहिक साधना सत्रों में उपलब्ध कराया जाता है जिसका लाभ सभी ले सकते हैं। इस नवरात्रि आदिशक्ति माँ गायत्री के अनुदान-वरदान आपको प्राप्त हों, आपकी साधना सफल हो, ऐसी हार्दिक शुभकामनाएं।

- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

ईश्वर विश्वास क्यों आवश्यक

ईश्वर विश्वास हमें हमेशा सन्मार्ग दिखाता है और सत्पथ पर आगे भी बढाता है । यह हमारे अन्दर का वह टार्च है जो एक बार जल जाए तो वह हमें निराशा और उदासी के घने अंधकार में भी रास्ता दिखा देता है जिससे हम अपनी मंजिल पर पहुँच सकें । यह ईश्वर विश्वास ही है जो हमारे उद्देश्य के रास्ते में बाधा बननेवाली हर विषम परिस्थितियों में भी हमें कोई मित्र दे ही देता है । वह मित्र और कोई नहींए हमारे अन्तःकरण में बैठे हमारे मानित ईश्वर होते हैं जिन्हें कोई मानता है तो कोई मानने से इन्कार करता है । परन्तु जो उन्हें मानता है वह अपने उस अदृश्य दोस्त के हाथ में हाथ डालकर आगे और आगे बढता जाता है और अन्ततः अपनी मंजिल को छू भी लेता है ।

ईश्वर विश्वास से ही हमारे अन्दर एस क्यू यानि आध्यात्मिक क्षमता का विकास होता चला जाता है । जिसके अन्दर एस क्यू यानि आध्यात्मिक क्षमता का विकास हो गया उसके अन्दर स्वयमेव रचनात्मक क्षमताए भावनात्मक क्षमता एवं बौद्धिक क्षमता का भी विकास हो जाता है पर जिसके अन्दर सिर्फ बौद्धिक क्षमता का विकास है उसके अन्दर जरूरी नहीं कि उसमें अन्य तीनों क्षमताओं का विकास हो सके । हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है ।

कोरी बुद्धि हमें जीवन के उतार-चढावों से लड.ने का हौसला उतना नहीं दे पाती है जितना बुद्धि के साथ भाव और आत्मा का संबंध जुड.ने पर । जिस बुद्धि के साथ भाव एवं आत्मा का संबंध जुड. गया उसे भगवान कृष्ण बुद्धियोग के नाम से पुकारते हैं और पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य उसे प्रज्ञायोग के नाम से पुकारते हैं । आज के समय में सभी को इसी योग की महती आवश्यकता है कि बुद्धि के साथ-साथ विवेक भी हो जो हमारे एस क्यू की वृद्धि से ही संभव है । इस क्षमता की वृद्धि हमें जीवन में जीने योग्य ही नहीं बनाती अपितु हमारे लिए क्षुद्रता से महानता का रास्ता भी खोल देती है । ऐसी ही बुद्धि हमें नर से नारायण की ओर आगे बढा देती है । इसलिए हर किसी को इस बुद्धियोग और प्रज्ञायोग के लिए दिन-रात्रि प्रयत्न करना चाहिए । यह ईश्वर विश्वास ही है जहाँ मृत्युतुल्य विष भी अमृत बन जाता है । प्रह्लाद और मीरा का उदाहरण हमारे सामने है ।

सचए ईश्वर विश्वास हमारे लिए संजीवनी बूटी है जिसे पीकर मूर्च्छित मन जीवंत हो उठता है । ईश्वर इस हेतु भी हमारे जीवन में बहुत जरूरी हैं जिससे वे हमें निराशा के क्षणों में ढाढस दे सकेंए वे उदासी के क्षणों में हमारे लिए अन्धे की लाठी बन सकें । वे हमारा सबसे बड॰ा सहारा बन सकें । वे कहीं भी हों पर उनका अदृश्य छत्र महसूस कर हम हौसला रखेंए आशावादिता रखेंए सकारात्मक दृष्टिकोण रखें जिससे बड॰ी से बड॰ी मुसीबत भी हमें छोटी लगे और हमें यह ईश्वर विश्वास श्रद्धा और आस्था के मजबूत पुल से ठीक उसी तरह पार कराता चला जाए जिस तरह नीचे नदी की भयंकर लहरों के होते हुए भी हम बेखौफ पुल को पार करते हैं ।

ईश्वर विश्वास इसलिए नहीं आवश्यक है कि यह हमें करना चाहिए या ईश्वर को यह पसंद है अपितु इसलिए आवश्यक है कि यह हमें विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत देता हैए साहस देता हैए धैर्य देता है और संयम देता है । यह हमसे कहता है कि कोई बात नहींए ईश्वर जो करेंगे अच्छा ही करेंगे । ईश्वर कभी किसी का बुरा नहीं करते । यह ईश्वर विश्वास हमें टूटने नहीं देता है और अगर हम थोड॰ा बहुत टूटते भी हैं तो ईश्वर हमें निराशा के उस अंधकार से खींचकर आशा के टिमटिमाते दीपक के पास लाकर बैठा देते हैं और अदृश्य रूप से ही सहीए हमपर आशीष बरसाते रहते हैं तो ईश्वर विश्वास कठिन परिस्थितियों की चिलचिलाती धूप में भी हमें टिके रहने का जो हौसला प्रदान करता है वही हमारे लिए काफी है क्योंकि आँधी या चक्रवात थोड॰ी देर के लिए ही आते हैं पर जो पीतपत्रवत् काँपने लगता है उसे वे उसी क्षण उड॰ाकर ले जाते हैं पर जो ईश्वर विश्वास रूप सघन छायादारए मजबूत वृक्ष को पकड.कर खड॰ा रहता है उसका वे कुछ भी बिगाड. नहीं पाते और जब आँधी या चक्रवात थम जाता है तो वह विश्वास पूर्वक अपने घर वापस आ भी जाता है । इसलिए हमें अपने जीवन की विपरीत परिस्थितियों से लड.ने के लिए ईश्वर विश्वास रूप ऐसे खम्भे की आवश्यकता है जो हमें हिलने न दे और अगर हम हिलें तो वह हमारे लिए एक सच्चे दोस्त की तरह मजबूत सहारा बनकर हमारे लिए सदैव खड॰ा रहे ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- भगवान शिव दूसरों को सुख देने के लिए विष पीने से भी पीछे नहीं हटे, शिव का सच्चा उपासक बनने के लिए उनके गुण को खुद में उतारें यानि शिव बनें। शिव अर्चन के साथ शिव की राह पर चलने का श्रेष्ठ समय सावन है।
- शिव शब्द बहुत छोटा है, पर इसके अर्थ इसे गंभीर बना देते हैं । शिव का व्यावहारिक अर्थ है- कल्याणकारी, शंभू का अर्थ है- मंगलदायक, शंकर का तात्पर्य है आनंद का स्रोत। यद्यपि ये तीनों नाम भले ही भिन्न हैं, लेकिन तीनों का संकेत कल्याणकारी, मंगलदायक, आनंदघन परमात्मा की ओर ही है।
- भगवान शिव त्रिदेवों के अंतर्गत रूद्र यानि रूद्र रूप वाले नहीं हैं। भगवान शिव की इच्छा से प्रकट रजोगुण रूप धारण करने वाले ब्रह्मा, सत्व गुण रूप विष्णु एवं तमोगुण रूप रूद्र हैं। जो क्रमशः सृजन, रक्षण (पालन) तथा संहार का कार्य करते हैं। ये तीनों वस्तुतः सदाशिव की ही अभिव्यक्ति हैं,इसलिए ये शिव से पृथक भी नहीं हैं।
- भगवान शिव काल यानि समय के प्रवर्तक और नियंत्रक होने के कारण "महाकाल" भी कहलाते हैं।
- शिवजी करुणा सिंधु, भक्त वत्सल होने के कारण भक्त की भावना के वशीभूत होकर, उसकी मनोकामना पूर्ण कर देते हैं । पर स्मरण रहे कि "देवो भूत्वा देवं यजेत्"। अपने इष्ट देव की आराधना करने के लिए पहले अपने आप को उनके अनुरूप बनाओ। इसलिए "शिवं भूत्वा शिवम यजेत्" को अपने आचरण में ढाल लें।
- शिवअर्चन तभी सफल होगा जब भक्त शिव के समान ही त्यागी, परोपकारी, संयमी, साधनाशील और सहिष्णु होगा।
- वृष का शाब्दिक अर्थ "धर्म" होता है। जिसे हम धारण करते हैं अर्थात हमारे कर्तव्य भी हैं ।भगवान शिव धर्म अर्थात कर्तव्यों के भी अधिपति हैं।
- शिवजी की आराधना में कर्मकांड की जटिलता नहीं, वरन भावना की प्रधानता है।
- भगवान शिव अति शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, इसी कारण वे आशुतोष कहलाते हैं।
- जिस प्रकार हलाहल विष को पीकर देवताओं को संकट से बचाया और नीलकंठ बन गए, उसी तरह उनके भक्तों को भी उनका अनुसरण करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।
- शिव तत्व को जीवन में उतार लेना ही शिवत्व प्राप्त करना है और यही शिव होना है। हमारा लक्ष्य भी यही होना चाहिए, तभी शिव अर्चन सफल होगा और सावन का पूरा लाभ मिलेगा।
- सावन में झूले आनंद का प्रतीक तो होते ही हैं, नए शोध के अनुसार यह थैरेपी का भी एक कुशल तरीका माना जाने लगा है।
- झूले की गति से मस्तिष्क के वे भाग जहां प्रेम भावनाओं का स्राव होता है, अधिक सक्रिय हो जाते हैं।
- जीवन में उत्सव का मतलब होता है उल्लास और पर्व का मतलब होता है प्रकाश । हमारा जीवन प्रकाश के उन्मुख हो इसलिए हम लोग पर्व मनाते हैं, हमारा जीवन खुशियों से भरा हो इसलिए उत्सव मनाते हैं।

जब प्रकाश और उल्लास मिलता है तो त्यौहार हो जाता है। जब हमारे अंदर से, अंतर चेतना से, अंतःकरण से उत्साह-उल्लास फूटने लगता है, तो उत्सव का माहौल बन जाता है।

प्रकाश पूर्ण जीवन रहे इसलिए तो व्रत होता है। व्रत का मतलब होता है जीवन शैली के नियम, आचरण के नियम। हम नियम का पालन करते हैं, व्रतशील जीवन इंसान जिए तो उसके जीवन में कोई समस्या नहीं आएगी । पर जब मन मालिन होता है यानि अंधकार छाया रहता है तो हम न पर्व मना पाते हैं, न उत्सव मना पाते हैं यानि कोई त्यौहार नहीं मना पाते हैं।

व्रत का मतलब होता है कि अंधकार के प्रवेश करने के लिए जो हमारे अंदर छिद्र है, उसे रोकने की व्यवस्था।

दुनिया में चाहे पड़ोसी का झगड़ा हो, चाहे परिवार का झगड़ा हो, चाहे राष्ट्र का झगड़ा हो कहानी स्वार्थ और अहंकार की ही होती है । इस अहंकार को मिटाने का एकमात्र तरीका है- ईश्वर उन्मुखी जीवन।

आदमी कपट करता है, मूर्ख बनाता है, नीचा दिखाता है, किसको? सच पूछें तो प्रकारांतर से अपने आपको। कोई किसी को मूर्ख नहीं बनाता, सब अपने आपको मूर्ख बनाते हैं।

श्रावणी पर्व "एकोहं बहुस्याम्" की ब्रह्म आकांक्षा का पर्व है, ज्ञान और कर्म के सम्मिश्रण से सृष्टि के सृजन का पर्व है, ऋषित्व के अभिवर्धन का पर्व है, यज्ञोपवीत नवीनीकरण, प्रायश्चित विधान यानि दश स्नान, हेमाद्रि संकल्प का पर्व है,भाई बहन के अटूट प्रेम, वृक्ष की रक्षा यानि रक्षाबंधन के त्यौहार का पर्व है।

सच कहें तो श्रावणी पर्व प्रकृति के पोषण का पर्व है। यह पर्व मूलतः प्रकृति के साथ सहजीवन, प्रकृति का सहचर्य, प्रकृति का पोषण, प्रकृति का अभिवर्धन, प्रकृति का संवर्धन है । इसलिए वृक्षारोपण को भी ब्रह्म कर्म कहा गया है। दरअसल प्रकृति का संवर्धन कर हम जीवन का संवर्धन करते हैं। द्विज होने का मतलब है चिंतन,चरित्र और व्यवहार को सुधार लेना, परिमार्जित और प्रकाशित होने के लिए कृत संकल्प होने का पर्व है द्विज पर्व यानि श्रावणी पर्व।

द्विज होने का अर्थ ही है - प्रकृति से परमात्मा की ओर यात्रा।

जाति का झगड़ा, ऊंच-नीच का झगड़ा, भेदभाव का झगड़ा मिटाने के लिए ही श्रावणी पर्व मनाया जाता है।

हर जन्म का एक उद्देश्य होता है, अगर आप उद्देश्य पूरा करके नहीं जाते तो आप बेवकूफ कहलाएंगे। हर एक के जन्म का उद्देश्य आत्मा को स्वतंत्र करना होना चाहिए।

ब्राह्मण है मन और ऋषि है कर्म ।ब्राह्मण मन का मतलब है जो ब्रह्म में लीन है, बस उस ओर उन्मुख है, बस उसके चिंतन में वही रचा-बसा है । ऋषि कर्म का मतलब है उस ब्रह्म के प्रयोजन को पूरा करने के लिए की जाने वाली तपस्या। यह मनुष्य को ऋषि बनाती है।

कठिन परिस्थितियां व लोग हर किसी के जीवन का हिस्सा है।

स्थितियों को अपने आप ठीक होने का इंतजार करना कभी-कभी और भी गलत हो जाता है। इससे हम हमेशा तनाव में घिरे रहते हैं ।

हम सब इंसान हैं, हमारे भी अपने-अपने इमोशंस और ईगो हैं। इसलिए आहत होने में देर नहीं लगती ।

यह समझना जरूरी है कि डिफिकल्ट प्रवृत्ति के लोग वे होते हैं, जो अपने जीवन में नाखुश और बोर होते हैं और इसलिए दूसरों को भी हर समय नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते हैं।

- कोई लगातार आपके बारे में बुरा बोलता रहे, तो सबसे पहले आवश्यक है उससे एक दूरी बनाकर रखी जाए। अगर वह आपको परेशान या दुखी करने में सफल हो जाता है, तो निश्चित ही यह उसकी जीत और आपकी हार होगी।
- ऐसे लोगों के बीच रहें जो आशावादी हों, शांत रहते हों और दूसरों को प्रोत्साहित करते हों। विपरीत परिस्थितियां और लोग आपकी भावनाओं को भड़का सकते हैं और ऐसी स्थिति में आपका प्रतिक्रिया करना आग में घी का काम करेगा ।सामने वाला तो चाहेगा आप भड़कें ताकि बात बिगड़े और उनके अहम की तुष्टि हो,लेकिन जब हम तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं तो असल में उसे वही देते हैं जो वह चाह रहा होता है। इसलिए पहले सोचें और फिर उत्तर दें। हो सके तो चुप रहें।
- आप कितना सोच-समझ कर प्रतिक्रिया करते हैं, यह बात आपके संबंधों को बिगाड़ने या बनाने में बहुत मायने रखती है।
- किसी भी स्थिति का जवाब देने से पहले स्वयं से दो प्रश्न पूछें- अगर मैं जवाब नहीं देता, तो बुरे से बुरे क्या होता और मैं जवाब देता हूं, तो बुरे से बुरे क्या होगा ? इन दो प्रश्नों के उत्तर में ही आपके सामने सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।
- अगर आप विपरीत परिस्थितियों का आंकलन करते हैं तो आप उससे जुड़े डर से बाहर आ जाते हैं।
- जब हम जिंदगी की हर बात का स्पष्टता से विश्लेषण करने लगते हैं, तो यह तय करना आसान हो जाता है कि हमें किस तरह जीना है।
- किसी बात को सीने से लगाए रहकर हमेशा कुढ़ते रहने से अच्छा है कि उस व्यक्ति को माफ कर दिया जाए, जिसने आपको आहत किया है। माफ करो और मुक्त हो जाओ। माफ करने से समस्याएं तो सुलझती ही हैं साथ ही एक नए सिरे से जिंदगी की शुरुआत भी की जा सकती है।
- अगर किसी व्यक्ति या स्थिति की वजह से आप लगातार परेशानी महसूस कर रहे हैं, तो इस बात को कागज पर लिखें और तब तक लिखें जब तक कि आपका दिमाग व दिल हल्का न हो जाए। कागज पर अपना सारा क्रोध और नफरत निकाल दें। फिर उसे फाड़ कर फेंक दें। अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना बेहद आवश्यक है और कहने से अच्छा लिखना ज्यादा बेहतरीन तरीका है।
- अगर आपको कोई परेशान कर रहा है, तो उसका असर जिंदगी व अपनी खुशियों पर न पड़ने दें । इससे आपके करियर व निजी जिंदगी दोनों पर बुरा असर पड़ सकता है। हर समय वही बात सोचने की बजाय खुश रहें।
- दिमाग से नेगेटिव विचारों को दूर करने का कारगर तरीका है संगीत सुनना। यह मन को तो शांत करता ही है साथ ही कुछ पल जब इसे सुनते हुए बिताते हैं,तो एनर्जी भी आपके अंदर भर जाती है। जिससे चीजों को दोबारा आंकलन करने में मदद मिलती है।

जिज्ञासा

प्रश्न- आपने माँ के लिए बच्चों की भावनाओं को यू ट्यूब पर बताया, पर बच्चो के लिए माँ की भावनाएँ क्या है, उसको नहीं बताया। उसको भी अगर आप बताते तो शायद अच्छा होता। जो माँ बच्चों को बड़ा करती है, नौ महीने पेट में रखती है, खून को दूध में बदल कर पिलाती है, बच्चों के ऊपर अपना सर्वस्व न्योछावर करती है, अपना पूरा जीवन लगाती है और जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, दूर चले जाते हैं। वह माँ अपने एकाकीपन को कैसे दूर करे?

उत्तर- अभी यू ट्यूब पर गायत्री शक्तिपीठ के चैनल पर रिश्तों की मर्यादाओं का 2021 में बोला गया क्रम चल रहा है। उसमें हमने अपने मित्र के साथ की गई बातचीत को बताया है, हमने कहा स्वार्थ मलिन करता है रिश्तों को, अहंकार मलिन करता है रिश्तों को, अधिपत्य मलिन करता है रिश्तों को। हमेशा ध्यान रखना चाहिए रिश्तों का बौद्धिक योग्यता से कोई लेना-देना नहीं है । ये अपने जीवन में भली-भाँति हमने महसूस किया है, हमारी माँ बौद्धिक रूप से आइंस्टीन नहीं थी, लेकिन हमारे जीवन में उसका सबसे ज्यादा प्रभाव रहा। हमारे मित्र भी कहते हैं अरुण, तुमने आज तक मुझे यह नहीं बताया लेकिन हम जो महसूस करते हैं कि तुम्हारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान तुम्हारी माँ का है। हमने भी कहा कि हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान माँ का है क्योंकि माँ के साथ शुकून मिलता था, वह सुखद अनुभूति, भावनात्मक तृप्ति अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। हमारे मित्र ने कहा कि अरुण रिश्ते ये होते हैं। और सचमुच हमें भी ये लगता है कि मेरा पहला प्यार और शायद आखिरी प्यार माँ ही रही। माँ आज इस दुनिया में नहीं है लेकिन आज भी उनको हम महसूस करते हैं, आज अगर कहे तों माँ को गए हुए 19 साल हो गए, कभी लगता है वह है, कभी लगता है वह छोड़ कर चली गयी। तो फिर हम अपने आप को कहते हैं हम तो उन्हीं के एक्सटेंशन हैं, हम तो उन्हीं के विस्तृत स्वरूप हैं, लेकिन कभी-कभी कसक उठती हैं फिर सोचते हैं ये तो किस्मत की बात है। हमारे मित्र कहते हैं एक समय मेरी तबियत खराब थी, तुमको छोड़ कर किसी ने मेरी तबियत जानने-सुनने की कोशिश की क्या? नहीं की न,क्योंकि अरुण, वे बहुत दर्दनाक बात कहते हैं, कि हम लोगों की जिंदगी में जरूरत का एक सामान हैं , जरूरत भर का एक समान, इससे ज्यादा कुछ नहीं, वो कह रहे थे और हमारी आंखें भर रही थीं, 2018 की बात है। हम भी कहते हैं कि हम भी यही हैं। एक लड़की है स्मृति, उसकी माँ का भी कुछ साल पहले देहांत हुआ है, वह इस सदमे से अब तक उबर नहीं पा रही है, वह मुझे कहती है, बदनसीबी की हद पूछते हैं तो सुनें, मेरे पास मेरी माँ नहीं है। हमने भी कहा एक यही रिश्ता है जो आज नैतिक है, इसके अलावा हर रिश्ता राजनैतिक है।

माँ जो होती है, वह प्रकृति है, नेचर है, भगवान है। देखिये जन्म देने की जिसमें ताकत है न, जीवन का पोषण करने की, वह समझें कि धरती पर ईश्वर तुल्य है। ये सच है कि संतान को पीड़ा होती है तो उन्हें कष्ट होता है। कभी-कभी संतान से थोड़ी बहुत उन्हें अपेक्षा भी होती है, कभी - कभी संतान उपेक्षा भी कर देती है, तो माँ की जो कसक है, दर्द है, टीस है, उसे हम महत्त्व नहीं देते, या जानबूझकर अनदेखी करते हैं, इस बात को आज की युवा पीढ़ी को भलीभाँति समझनी चाहिए। क्योंकि हमारा जीवन बहिर्मुखी है, हम हमेशा बाहर देखते रहते हैं, अपने अंतर्मन में या अपने अतीत को झांक कर नहीं देखते हैं। अपनों के मरने पर हम रोते हैं, क्या चीज़ है जो हमें रुलाती है? हमें यादें रुलाती है, स्मृतियां रुलाती है, वो बार-बार हमारी भावनाओं को कुरेदती हैं। एक झटका लगता है, एक शॉक लगता है, पर समय

के साथ-साथ, धीरे-धीरे वो स्मृतियाँ धूमिल पड़ जाती हैं, धुंधली हो जाती हैं। समय की धूल, समय का कोहरा, समय का कुहासा छा जाता है। फिर स्मृतियाँ हमें महसूस नहीं होती हैं। हम उनका एहसास नहीं कर पाते। बच्चे तो आगे बढ़ जाते हैं बड़े हो कर, फिर बच्चे के भी बच्चे हो जाते हैं, माँ पीछे ही रह जाती है, यूँ कहे पीछे छूट जाती है, पलटकर बच्चे पीछे सोच नहीं पाते। पर माँ बच्चे को जन्म देने के साथ स्थिर हो जाती है। उसके जीवन में पति है और बच्चा है, बस उसकी भावनाओं की डोर या तो पति के साथ जुड़ी है या बच्चों के साथ, या फिर थोड़ा बहुत अपने माँ-बाप के साथ। क्योंकि समय के साथ उनकी भी स्मृतियाँ धूमिल हो जाती हैं अपने माँ बाप के लिए, बच्चों के मन में तो माँ -बाप के प्रति स्मृतियाँ धूमिल हो ही जाती है। लेकिन माँ जो बच्चे को जन्म देती है उसका अहसास स्थिर हो जाता है, वो कसक, वो टीस यथावत बनी रहती है जब वो दूर हो जाते हैं। ये प्रकृति का नियम भी है, आज जन्मस्थल को अपनी कर्मस्थली बहुत कम बच्चे बना पाते हैं, क्योंकि इसकी संभावना छोटे शहरों में तो नहीं के बराबर है, जो जन्मस्थल को अपना कर्मस्थल बना पाते हैं सचमुच वो माँ-बाप बहुत सौभाग्यशाली हैं, पर ये समय का दोष है, युग का दोष है, पढ़-लिखकर उन्हें बाहर जाना ही पड़ता है। तो जब बच्चे बड़े हो जाते हैं और बाहर कमाने के लिए चले जाते हैं तो उनके बीच भावनात्मक संवाद नहीं होता है। माँ जो महसूस करती है वह बच्चे महसूस नहीं कर पाते हैं। यही बात पति के साथ भी होती हैं कामकाज में वो इतने व्यस्त हो जाते हैं कि पत्नी पर उस तरह से ध्यान नहीं दे पाते जो शादी के दो तीन साल तक रहती है। भावनाएँ सिमट जाती हैं। तो क्या होता है,वो स्त्री जो प्रौढ़ हो चुकी है, बुजुर्ग हो चुकी है, जिसकी उम्र 55,60,65 हो गई है, तो जहाँ-जहाँ वे स्मृतियाँ जिंदा हैं, वह कसकती है, टीसती है, पीड़ा देती है। परन्तु माँ की यह पीड़ा, यह कसक, यह दर्द उसकी नियति है, लेकिन वह माँ है, इस पीड़ा के साथ उसके मन में अपने बच्चों के लिए हमेशा आशीर्वाद रहता ही है। बच्चों के मन में अगर वही स्मृति जिंदा रहे, तो भावनात्मक संवाद होता रहता है। पर आज संवाद के अवसर कम हैं, विवाद के अवसर ज्यादा हैं । तो आज माँ और बच्चों के बीच में भावनात्मक संवाद नहीं होता है। माँ तो तरसती रहती है, कसकती रहती है। पर बच्चो की परिस्थितियां संवाद को कम या ज्यादा करती रहती है। माँ की ममता तो है ही पर उस ममता को समझने वाली संतान की स्मृतियां धुंधली हो जाती है। वह कसक तो हर एक माँ को रहती ही रहती है। यह कसक उनकी नियति है। हर मां प्रकृति है, नारी यानि माँ प्रकृति का एक मूर्त रूप है। जैसे हम पेड़ की एक डाल काट लेते हैं, पहाड़ खोद डाले, हम सोचते हैं कि उसे दर्द कितना होगा? नहीं सोचते हैं। लेकिन प्रकृति जहाँ तक होता है सहन करती है और आशीर्वाद ही देती है। वही स्थिति माँ की है। पर बच्चों को भी चाहिए कि माँ से जुड़ी हुई स्मृतियों को धुंधला पड़ने न दें। जो ऐसा कर पाते हैं सचमुच वो बच्चे भी सौभाग्यशाली होंगे। जैसे जीव और ईश्वर का नित्य संबंध है, पर संवाद नहीं होता, उसी तरह माँ और बच्चों के बीच नित्य संबंध है पर संवाद नहीं होता। अगर संवाद हो तो माँ को वो टीस, वो कसक नहीं रहेगी। इसमें एक मानवीय भाव भी है, जैसे छोटा बच्चा कहीं से आता है और माँ के गोद मैं बैठ जाता है, छाती से लिपट जाता है, पर बच्चे बड़े हो जाते हैं तो वैसा हो नहीं पाता। तो माँ के मातृत्व को थोड़ा सा समय के साथ विस्तार लेना चाहिए, बहू को भी बेटे के बराबर का अधिकार दे देगी,अपनी बेटी समझकर उसी तरह का स्पर्श दे देगी तो जीवन सुखी हो जायेगा। हमेशा ये बात हम सभी को समझने चाहिए कि भावनात्मक संवाद हमें शुकून देता है। भावनाएँ तब आपको शुकून देती हैं जब उसमें संवाद होता है। बातचीत तो सभी के बीच होती है, भावनात्मक संवाद महत्वपूर्ण है। जहाँ-जहाँ हमारा भावनात्मक संवाद है, वहाँ-वहाँ शांति है, शुकून है, सुख है, प्रेम है, वहाँ - वहाँ प्रसन्नता भी है। पर आज संवाद का अभाव संतान और अभिभावक के बीच कम हो गया है, कोशिश होनी चाहिए कि यह बढ़ जाए।

प्रश्न- प्रकृति और पुरुष, शिव और शक्ति एक दूसरे के पूरक हैं, कहते है अर्द्धनारीश्वर हैं, जुड़े हुए हैं। पुरुष के बिना प्रकृति नहीं, प्रकृति के बिना पुरुष नहीं, जबकि नारी जागरण में कहते हैं कि नर को बनाने वाली औषधि नारी है।

उत्तर- औषधि नहीं आधार है, जड़ी बूटी थोड़े है, नारी जननी है, कोख है, गर्भ है। एक बात ध्यान से समझने की जरूरत है जिसको हम सामाजिक रूप से पुरुष कहते हैं, मेल, और जिसको हम सामाजिक रूप से फीमेल, स्त्री कहते हैं, वो प्रकृति और पुरुष नहीं हैं, ये दोनों शब्द प्रयोग किए गए हैं दार्शनिक अर्थों में। सामाजिक रूप से कोई व्यक्ति फीमेल है तो वो प्रकृति नहीं है, जो मेल है वह पुरुष नहीं है। पुरुष का मतलब जीवात्मा। सांख्य दर्शन में पुरुष और प्रकृति का सिद्धांत है। पश्चिम का भी एक फिलॉसफर हुआ है लाइविनित्स, उसका भी यही सिद्धांत है मोनेटोलॉजी। सांख्य दर्शन में पुरुष एक नहीं अनेक है, और प्रकृति एक है। सांख्य दर्शन और वेदान्त दर्शन में यही फर्क है। लाइविनित्स भी कहता है मॉनेट्स कई हैं, मतलब चिद अणु कई हैं, मतलब चैतन्य कण। सांख्य ये भी कहता है कि ईश्वर को सिद्ध नहीं किया जा सकता, योग दर्शन थोड़ा इससे अलग है, वह कहता है कि जितनी आत्माएं हैं, जितने पुरुष हैं उसमें एक विशेष आत्मा है, वह ईश्वर है। हर जो जीव सत्ता है, वो पुरुष शरीर में हो या स्त्री शरीर में हो, वह पुरुष है। क्योंकि उसकी जो आत्मा है वह पुरुष है। पुरुष और प्रकृति के सिद्धांत का मतलब ये है कि पुरुष चेतन है और प्रकृति जड़ है। हमारे अंदर जो आत्मचेतना है वह पुरुष है। एक और पश्चिम का दार्शनिक हुआ है ब्रेडले, शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन, वेदान्त दर्शन को पढ़ना चाहते हैं, तो आप ब्रेडले को पढ लें। एकेश्वर वाद का सिद्धांत है। सांख्य दर्शन और वेदांत दर्शन में यही फर्क है, वेदांत कहता है परब्रह्म परमात्मा एक है, उसके अलावा और कोई सत्ता नहीं है यानि आत्मा एक है, अनेक नहीं है और सांख्य कहता है कि अनेक है। दोनों के बीच का सामंजस्य है कि प्रकृति कृति से लिपटी हुई जीवात्मा अपने को अलग सत्ता के रूप में महसूस करती है। इसलिए अनेक भासित होती है जैसे सूरज तो एक ही है,लेकिन हर एक घड़े में अलग-अलग कई सूर्य दिखता है। तो ये दार्शनिक पहलू है। पुरुष और प्रकृति, शिव और शक्ति, ये सामाजिक दायरा नहीं है। अर्द्धनारीश्वर हर व्यक्ति है, क्योंकि कोई पुरुष बिना प्रकृति के अपने को अभिव्यक्त नहीं कर सकता। कोई जीवात्मा बिना शरीर के अपने को अभिव्यक्त नहीं कर सकती। स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर को अगर हटा लें तो जीवात्मा क्या अपने को अभिव्यक्त करने लायक रहेगी? नहीं। अर्द्धनारीश्वर का मतलब मेल-फीमेल नहीं, इसका मतलब है कि हमारा जो जीवन है, इसमें पुरुष और प्रकृति संयुक्त है। इसमें जो जड़ हिस्सा है वह प्रकृति है, जो चेतन हिस्सा है वह पुरुष है। ये हर व्यक्ति है, इसमें मेल या फीमेल पार्ट नहीं है। ये सिर्फ मनुष्य के साथ ही लागू नहीं है हर एक जीव के साथ लागू है। हर एक जीव सत्ता हाथी-घोड़ा, पेड़-पौधे सभी के साथ है। हम हमेशा बोलते हैं पुरुष प्रधान समाज, ये शब्द सामाजिक नहीं दार्शनिक शब्द है। आदमी या औरत सभी पुरुष है। हमारी भावना, हमारे इमोशंस जिस तरह के होंगे उस तरह का शरीर मिलेगा। हमारी भावना में स्त्री तत्व की प्रधानता है तो प्रकृति हमें स्त्री शरीर प्रदान कर देगी, पुरुष की भावना है तो पुरुष शरीर प्रदान कर देगी। आत्मा नर या नारी नहीं है। आत्म चेतना होते हुए भी हम प्रकृति से संयुक्त और संबद्ध हैं और हमें अपनी आत्मचेतना का भान नहीं है। इसका परिणाम ये है कि जगत में सारी स्त्रियां हैं, यह जीवन स्त्रीप्रधान है, क्योंकि प्रत्येक आत्मचेतना प्रकृति के द्वारा आवृत और आबद्ध है। सभी आत्मा प्रकृति के वशीभूत है, इसलिए प्रकारांतर से स्त्रियाँ ही है। केवल जो नित्य मुक्त आत्मा है, जो प्रकृति के पार चली गई है वही पुरुष है। जो प्रकृति के अधीन है,वह कैसे पुरुष हो सकता है? वृन्दावन

में जीव गोस्वामी से मिलने मीराबाई गई, जीव गोस्वामी ने पर्दा लगा दिया, क्योंकि वे नारी की ओर दृष्टिपात नहीं करते थे, तो मीराबाई खूब हँसी, अच्छा, ये कौन पुरुष है? बिहारी जी का नया पट्टेदार कौन आ गया वृन्दावन में? पुरुष तो केवल श्रीकृष्ण हैं, पुरुष मतलब परमात्मा, ऐसा पुरुष जो प्रकृति से कहीं भी आबद्ध नहीं है, प्रकृति जिसके अधीन है। ऐसा तो कोई संसार में नहीं है सभी प्रकृति के अधीन हैं, सभी संसार में तो स्त्रियां ही स्त्रियाँ है ।ऐसा मीराबाई ने कहा, तो जीव गोस्वामी ने पर्दा हटाया, हाथ जोड़कर माफी मांगी। आत्म चेतना का आभास है तो आप पुरुष हैं, लेकिन शरीर को ही सबकुछ मानते हैं तो फिर आप स्त्री हैं।

समझने की बात बिना चेतन के जड़ स्थिर नहीं रह सकता उसका डीकेड हो जाएगा, उसका क्षरण हो जाएगा, अक्षर के बिना क्षर नहीं रह सकता, अगर आत्मा नहीं हैं तो शरीर नहीं रहेगा, इसलिए पुरुष है चेतना और प्रकृति उसका आकार-प्रकार है। आत्म चेतना के बिना न स्त्री शरीर रहेगा, न पुरुष शरीर रहेगा। और बिना जड़ पदार्थ के पुरुष की अभिव्यक्ति नहीं है। गूढ विषय है, कुछ लोग कन्फ्यूज़ हो गए होंगे, कुछ लोगों को शायद बात समझ में आ गई होगी।

प्रश्न- कृष्ण जी बड़े हैं या शंकरजी बड़े हैं ? वैसे सब लोग कहते हैं कि सांप, बिच्छू, भूत-पिशाच उन्हीं के बस में हैं, इसलिए शंकर जी बड़े हुए और कुछ लोग कहते हैं कृष्ण जी ने सृष्टि का संहार किया, इसलिए कृष्ण जी बड़े हैं। यही हमको समझ में नहीं आता कि कृष्ण जी बड़े हैं या शंकरजी बड़े, ये कन्फ्यूजन आप ही दूर कर सकते हैं।

उत्तर- जैसे एक ही बच्चे को घर में बबलू भी बुलाया जाता और स्कूल में अखिलेश बुलाया जाता है, तो बबलू और अखिलेश एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं । चाहे जिस नाम से बुलाएं आदमी वही रहेगा । कृष्ण भगवान और शंकर भगवान एक ही परमात्म चेतना के दो नाम हैं। एक ही परात्पर चेतना अपने कार्य के अनुसार, अपने उद्देश्य के अनुसार अपने को अभिव्यक्त करती है । जैसे विष्णु भगवान के अवतार कृष्ण जी भी हैं और रामजी भी हैं, यह अलग-अलग नहीं हैं । अलग-अलग इसलिए लगते हैं कि दोनों का काल अलग-अलग है । युग की जो आवश्यकता थी तो विष्णु भगवान ने अपने को राम के रूप में प्रस्तुत किया, युग की आवश्यकता थी तो कृष्ण के रूप में प्रस्तुत किया। दोनों की कार्यशैली भिन्न-भिन्न थी, दोनों ने जो कार्य किए उस युग की मांग के अनुसार था। शंकरजी का जो निहित दायित्व है वो उसके लिए कार्य करते हैं, जो उनकी भूमिका है वो निभाते हैं । वेद में एक मंत्र है, "एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति, एक ही सत्य को ज्ञानी जन अनेक तरह से कहते हैं। एक ही तत्व को ज्ञानी भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं । सद का मतलब अस्तित्व भी होता है, एक ही अस्तित्व है, एक ही तत्व है, जैसा हमने अभी कहा बबलू भी वही है और अखिलेश भी वही है। वैसे भगवान कृष्ण ने सृष्टि का संहार नहीं किया था, महाभारत का युद्ध रचा था, उसके बाद भी दुनिया बची रही थी। जैसे विश्व युद्ध हुआ, लेकिन क्या उसके बाद विश्व खत्म हो गया? नहीं न। महाभारत उस जमाने का विश्व युद्ध था । अगर दुनिया खत्म हो जाती तो युधिष्ठिर राज करता क्या? उसके बाद अभिमन्यु का बेटा परीक्षित राजा बनता क्या? अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ को अश्वस्तथामा ने तीर मारा था जिसकी रक्षा भगवान कृष्ण ने की थी । राजा विराट की बेटी थी उत्तरा, जहाँ एक वर्ष के लिए पांडव अज्ञातवास में रहे थे । आपने प्रश्न किया, आपका एक रूप विद्यार्थी का है, जब आप रक्षाबंधन में बहन से राखी बंधवाये होंगे तो आप विद्यार्थी नहीं भाई होंगे। तो जीवन, उद्देश्य के अनुसार प्रस्तुत होता है । उसी तरह कृष्ण भगवान निश्चित उद्देश्य से लेकर पैदा हुए थे, अवतार का जो

प्रयोजन था, उस कार्य को उन्होंने पूरा किया । परमात्मा की शक्ति धारा में एक धारा ब्रह्मा, एक धारा विष्णु, एक धारा शिव। परमात्मा के जो संहार कार्य होते हैं, कल्याण कार्य होते हैं वो भगवान शिव करते हैं। दुनिया के पालन-पोषण की व्यवस्था भगवान विष्णु करते हैं। दुनिया की रचना, नई प्रजातियां, नई चीजों का निर्माण ब्रह्मा जी करते हैं। पर तत्व एक ही है।

तमसो मा ज्योतिर्गमय, प्रकाश का कोई दीया जले, हम उसे ब्रह्मा कहें, विष्णु कहें, शिव कहें, राम कहें, कृष्ण कहें, दुर्गा कहें, गायत्री कहें, या उसको कुछ ना कहें, या आत्मा कह लें, परमात्मा कह लें, परब्रह्म कह लें, बस जीवन प्रकाश के उन्मुख और प्रकाश पूर्ण होना चाहिए। जब हम शिव, विष्णु, ब्रह्मा, दुर्गा, गायत्री कहते हैं तो क्या मतलब होता है? ब्रह्म कहते हैं मतलब ऐबसोल्यूट, मतलब जो संपूर्ण है और जिसमे सभी संपूर्णता से समाहित है । और जब सभी संपूर्णता से समाहित होंगे तो न भेद होगा और न झगड़ा होगा। झगड़े की जड़ है अहंकार। आधिपत्य मेरा, आकांक्षाएं मेरी, सभी दास हैं हमारे । दुनिया में चाहे पड़ोसी का झगड़ा हो, चाहे परिवार का झगड़ा हो, चाहे राष्ट्र के झगड़े हों, कहानी स्वार्थ और अहंकार की ही होती है। इस अहंकार को मिटाने का एकमात्र तरीका है ईश्वर उन्मुखी जीवन। आदमी कपट करता है, मूर्ख बनाता है, नीचा दिखाता है, किसको? सच पूछें तो प्रकारांतर से अपने आपको। कोई किसी को मूर्ख नहीं बनाता, सब अपने आप को मूर्ख बनाते हैं।

प्रश्न- हम सभी जानते हैं कि भगवान और अल्लाह एक ही हैं, फिर यह जाति और धर्म क्यों? कुछ लोगों का मानना है कि मनुष्यों ने लोगों को जाति में बांटा है, पर कहीं न कहीं मुझे ये भी लगता है कि धर्म भी मनुष्यों द्वारा बांटा गया है। जब ईश्वर और अल्लाह एक है तो यह जाति-धर्म कैसा? कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जो किसी काम को करने न दे, इसलिए मेरा प्रश्न आपके समक्ष है, कृपया मुझे इस चिंता से मुक्त करें।

उत्तर- जब अल्लाह कहा गया तो वहाँ पर कोई आस-पास ईश्वर कहने वाला कोई नहीं था। दूर-दूर तक कोई ईश्वर शब्द का उच्चारण करने वाला नहीं था। और जब ईश्वर कहा गया तो दूर-दूर तक कोई अल्लाह कहने वाला नहीं था। जब पहली बार अल्लाह कहा गया, तो कई किलोमीटर तक कोई ईश्वर कहने वाला नहीं था। उसी तरह यहाँ पर जब वैदिक ऋषियों ने ईश्वर शब्द पुकारा तो कई किलोमीटर तक यहाँ भी अल्लाह कहने वाला कोई नहीं था। पैगंबर साहब के समय जब उन्होंने पहली बार अल्लाह शब्द का उच्चारण किया, उनके सामने ये बात होती तो शायद वे कह देते कि हम तो अल्लाह कहते हैं, लेकिन ईश्वर और अल्लाह एक ही हैं । उस समय तो ये कहानी ही नहीं थी । हिजरी संवत् से मुसलमानों का प्रादुर्भाव हुआ है, हिजरी, हिजरत से बना है। हिजरत यानी माइग्रेट होना, मतलब प्रवास करना। जैसे यहाँ से कोई व्यक्ति दिल्ली बस जाए, तो वो माइग्रेट हुए। मक्का से मदीना जाने की यात्रा को हज कहते हैं। जिस साल मक्का से मदीना की पहली बार यात्रा मोहम्मद साहब ने की, उसको हिजरी कहा गया और हिजरी संवत् बना। मोहम्मद साहब ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही, मैं हिंद की ओर से आती हुई ठंडी हवाओं को मतलब रूहानी हवाओं को, आत्मिक सुकून देने वाली हवाओं को महसूस कर रहा हूँ। उस समय उन्हें ये नहीं पता होगा कि हिंद में ईश्वर कहा जाता है, अगर पता होता तो वो कहते कि जिसे हम अल्लाह कहते हैं उसी को हिंदुस्तान में ईश्वर कहते हैं। अपने यहाँ यह पहली बार प्राग ऐतिहासिक काल के पहले ईश्वर का उच्चारण हुआ, ईश्वर के दो अर्थ हैं- एक ऐश्वर्यवान् दूसरा ईशन यानि शासन करने वाला। जो शास्ता है सबका। ये दरअसल परमात्मा के गुणों का विशेषण है। भगवान

को हम ईशान भी कहते हैं, भगवान को हम परब्रह्म भी कहते हैं। नाम हमेशा गुणवाचक होते हैं। जैसे हम कहते हैं अल्लाह हो अकबर, अकबर मतलब महान। बादशाह अकबर को अकबर महान कहते हैं यह पुनरुक्ति दोष है, एक ही महान शब्द को हम दो बार कहते हैं। तो बात ये है कि उस समय समस्या नहीं थी जिस जमाने में लोगों ने उच्चारण किया, समस्या तो अब है न।

जहाँ तक जाति-धर्म का प्रश्न है, उस समय तो जाति-धर्म था ही नहीं, उस समय तो एक ही जाति मनुष्य जाति थी। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि कृत युग यानि सतयुग में तो सभी ज्ञानी-ध्यानी थे, भगवान का ध्यान करते थे और निरंतर करते थे। जाति तो कर्म के आधार पर थी। वेद में लिखा है कि मेरे पिता पढ़ाने का काम करते हैं इसलिए वे ब्राह्मण हैं, मेरी माँ सेवा का काम करती है इसलिए शूद्र है, मैं व्यापार करता हूँ इसलिए मैं वैश्य हूँ, मेरा भाई सबकी रक्षा का काम करता है इसलिए वह क्षत्रिय है। जिसका जो काम है वह वो इसी जाति का है, जाति से ज्यादा वर्ण कहा जाना चाहिए। गुण और कर्म से वर्ण बना। जन्म से वर्ण तो बना नहीं, जाति बनी नहीं, कर्म से बना। लेकिन ये समाज ने बनाया, ईश्वर ने बनाकर नहीं भेजा है। आप जाति बदल सकते हैं, जैसे विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण बने। पहले राजपाट करते थे, तपस्या की, गायत्री का साक्षात्कार किया, गायत्री तत्व को जाना, ऋषि बन गए, ब्रह्मतत्व को जान लिया, तो ब्राह्मण बन गए। गायत्री मंत्र का जप कर सभी ब्राह्मण हो जाते हैं। जाति का संबंध धर्म से नहीं है, जाति का संबंध समाज से है, जाति सामाजिक समस्या है, धर्म का संबंध प्रकृति और अध्यात्म से है। धर्म जीवन के नियम हैं, उसका जाति से कोई लेना-देना नहीं है। जाड़े में कैसे रहना चाहिए, गर्मी में कैसे रहना चाहिए, क्या खानपान होना चाहिए, इसका संबंध प्रकृति से है। धर्म हमको जीने की ऐसी विधियां, ऐसी तकनीक, ऐसा स्वरूप बताता है, जिससे दृश्य और अदृश्य दोनों संतुलित रहे। हमारा धर्म हमें कंप्लीट, इन्टीग्रेटेड, संपूर्ण रूप से, समग्र रूप से जीना सिखाता है। जीने के कुछ नियम हैं, उसमें छुआछूत नहीं है, उस नियम का कुशलता पूर्वक पालन करें। धर्म आपको प्रदूषण मुक्त जीवन जीने का तरीका बताता है। बाइबिल में जब ओल्ड टेस्टामेंट लिखा गया तो यहूदियों ने संबोधित किया 10 कमांडेंट्स ऑफ लाइफ, मतलब धर्म के 10 नियम, 10 उपदेश, 10 आदेश। कमाण्डेंट मतलब आदेश। मनु ने कहा धर्म के 10 लक्षण होते हैं। तो धर्म का संबंध प्रकृति से है और जाति का संबंध समाज से है। महात्मा बुद्ध ने ईश्वर की चर्चा नहीं की, आत्मा की चर्चा नहीं की, उन्होंने धर्म की चर्चा की और कहा कि एष धम्म सनन्तनो, जिस तरह से जीवन सनातन है उसी तरह से धर्म भी सनातन है। पीड़ा मनुष्य को है तो समाधान भी मनुष्य को मिलता है।

प्रश्न- हमें पढ़ना जरूरी है या नहीं?

उत्तर- प्रणाम करना जरूरी है या नहीं? जिस तरह बड़ों को प्रणाम करना जरूरी है, उसी तरह जीवन को सही तरीके से जीने के लिए पढ़ना भी जरूरी है। पढ़ना सबके लिए जरूरी है। शिक्षा से बौद्धिक विकास, मानसिक विकास और व्यक्तित्व का विकास होता है। इन काले अक्षरों में जीवन का उजाला है। अक्षर काले हैं, लेकिन रोशनी उजली है। इसलिए पढ़ना अनिवार्य रूप से चाहिए। सच कहें तो शिक्षा जीवन का सौंदर्य है, व्यक्तित्व विकसित होता है।

प्रश्न- मेरा प्रश्न यह है, आप ध्यान में बोलते क्यों है?

उत्तर- ठीक है अब नहीं बोलेंगे, लेकिन नए व्यक्ति कैसे ध्यान कर पाएंगे? आपकी समस्या है कि हम चुप रहें, नए लोगों की समस्या है कि हम चुपचाप बैठकर क्या करें। उन्हें इन्स्ट्रक्शन तो देना होगा। ध्यान अगर सामूहिक है, तो

सामुहिक चिंतन और चेतना को संबोधित करना होगा। अगर व्यक्तिगत है, हम और आप अकेले ध्यान करने के लिए बैठे हैं, तो कोई किसी से नहीं बोलेंगे, चुपचाप ध्यान करेंगे। लेकिन समूह में जो लोग बैठे हैं, उनका क्या करें? वैसे भी एक-डेढ़ मिनट इन्स्ट्रक्शन देने के बाद, तो चुप हो ही जाते हैं।

प्रश्न- मेरा प्रश्न यह है कि वेद मूर्ति, तपोनिष्ठ, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बारे में बहुत कुछ सुनते हैं, पर वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के बारे में कुछ नहीं सुनते हैं। ऐसा क्यों? क्या कभी उन्होंने कुछ किया ही नहीं?

उत्तर- उनको जानना-समझना है तो महाशक्ति की लोकयात्रा पुस्तक पढ़ लीजिए, अभी उनकी जन्मशताब्दी मनाने की बात 2026 में हो रही है। पूरे भारत वर्ष में ज्योति कलश यात्रा निकली है, वंदनीया माताजी के जन्म के 100 साल हो जाएंगे। जनवरी 2026 में एक विराट कार्यक्रम शांतिकुंज हरिद्वार में आयोजित है ।

प्रश्न- बर्बरीक, अश्वत्थामा, घटोत्कच और अभिमन्यु, इनका तो युद्ध से कोई मतलब नहीं था, तो उनको क्यों मारा गया?

उत्तर- अभी सुपौल इंजीनियरिंग कॉलेज में इंडक्शन क्लास लेने गए थे, वहां चलते-चलते एक लड़के ने भी ये प्रश्न पूछा था- अभिमन्यु, घटोत्कच, अश्वत्थामा, ने तो युद्ध लड़ा। केवल बर्बरीक ने युद्ध नहीं लड़ा, लेकिन बर्बरीक को मारा नहीं गया, वैसे भी बर्बरीक को कोई मार भी नहीं सकता था। वो तो महा सिद्ध विजय सेन का शिष्य था, उसको कौन मार सकता था? बर्बरीक तो देवी का भक्त था। बर्बरीक के पास तीन बाण थे, चौथा बाण उसके पास था ही नहीं। अपने आप तीन बाण फिर वापस आ जाते थे। जब युद्ध की घोषणा हुई, तो उसकी माँ ने कहा- जो निर्बल पक्ष है उसकी मदद कर देना। तो जब कौरव निर्बल होंगे तो उनको मदद करेंगे, जब पांडव निर्बल होंगे तो उनको मदद करेंगे। तो फिर से भगवान कृष्ण ने कहा- ये तो सही नहीं है, पर ऐसा तुम्हारे पास क्या है? तो बर्बरीक ने कहा- चलो हम किसी की मदद नहीं करते पर इतना झंझट क्यों करते हो, 1 मिनट में युद्ध समाप्त हो जाएगा । कृष्ण भगवान बोले 1 मिनट में युद्ध कैसे समाप्त हो जाएगा? इतने महारथी सब हैं । तो बर्बरीक ने कहा कि वो सब तो आप छोड़ो, 1 मिनट क्या है, एक क्षण में हम युद्ध समाप्त कर सकते हैं। पहला बाण मारेंगे, जिसका-जिसका मृत्यु का योग है, उसके माथे पर निशान लग जाएगा, दूसरा बाण मारेंगे तो सारे के सारे मर जाएंगे। तीसरे बाण की जरूरत ही नहीं पड़ेगी । भगवान कृष्ण बोले ये कैसे संभव है? तो बर्बरीक ने कहा कि अभी हम बताते हैं। यह पेड़ है इससे जिस पत्ते के गिरने का योग होगा, एक साथ सबको गिरा देंगे, एक बाण मारा, जो पत्ता गिरने वाला था उसके ऊपर लाल चिह्न लग गया, दूसरा बाण छोड़ा, वो सारे पत्ते गिर गए । और फिर दोनों बाण वापस उसके पास आ गए। भगवान कृष्ण ने एक पत्ता पैर के नीचे दबा दिया और कहा सारे पत्ते कहाँ, एक पत्ता गायब भी तो है। तो बर्बरीक ने कहा- भगवन! ये आपके पैर के नीचे है और एक बाण इसलिए आपके पैरों पर लगा है, ये पैर दिव्यता से वंचित हो गया। आपके पैर में घाव हो गया है, जब भी आप अपनी देह का त्याग करेंगे, ठीक है आप अपनी इच्छा से ही देह का त्याग करेंगे, पर इसी पैर में आपको बाण लगेगा और तब आप देह त्याग करेंगे। कृष्ण भगवान ने कहा कि बात तो तुम्हारी सही है, अच्छा एक बात बताओ, तुम जो ये सब करोगे इससे प्रकृति के नियम की अवहेलना नहीं होगी । किसी को कोई वरदान है, किसी के मरने का कोई और निश्चित विधान है, किस-किसको कैसे मरना है, उसकी अवहेलना नहीं होगी? तो बर्बरीक ने

कहा कि विधान के बारे में तो मैं नहीं कहता, पर जिसको मरना है वह मरेगा और युद्ध क्षण भर में समाप्त हो जाएगा । तो भगवान कृष्ण ने कहा कि ऐसे तो युद्ध समाप्त नहीं होगा, अपने नियम-विधान के अनुसार समाप्त होगा, मानवीय पुरुषार्थ के अनुसार समाप्त होगा । चमत्कार के अनुसार समाप्त होगा तो लोग मानेंगे ही नहीं, फिर आगे का इतिहास भी खत्म हो जाएगा । तो बर्बरीक ने कहा कि आप जो आदेश दें हम वह करेंगे । तो कृष्ण भगवान ने कहा कि तुम अपना सिर हमें दान कर दो, तो बर्बरीक ने कहा अच्छा बस इतनी सी बात? हम दान कर देते हैं । तो बर्बरीक ने अपने खड्ग से अपना सिर काट कर कृष्ण भगवान को दान दिया । फिर कहा और कुछ नहीं बचा प्रभु, एक अभिलाषा थी जो रह गई थी अधूरी । हाँ-हाँ अभिलाषा बोलो । मैं इस युद्ध को देखना चाहता था । ठीक है तुम इस युद्ध को देखोगे । फिर तब तक चंडिका आ गईं, देवी ने कहा- आपने ये क्या किया इससे सिर का दान ले लिया, इसको तो मरना ही नहीं है? तो भगवान कृष्ण ने कहा- इसका सिर युगों तक जीवित रहेगा और यह हमारा नाम पाएगा और देवता की तरह पूजा जाएगा और यह वरदान देने में सक्षम होगा, राजस्थान में खाटू श्याम की पूजा आज भी बड़े धूमधाम से होती है, वो खाटूश्याम ही बर्बरीक हैं । इसलिए इन्हें शीषदानी खाटू श्याम कहा जाता है । तो बर्बरीक को किसी ने नहीं मारा उसने स्वेच्छा पूर्वक अपना शीष दान किया था । भगवान कृष्ण ने उसके सिर को एक पर्वत पर रख दिया था कि जब तक युद्ध चलेगा तो वहाँ से युद्ध को देखते रहोगे । जब महाभारत युद्ध समाप्त हो गया, तो सभी आपस में लड़ने लगे, किसी ने कहा, भीम ने युद्ध जीता, किसी ने कहा अर्जुन ने युद्ध जीता, तो भगवान कृष्ण ने कहा, इनसे भी तो पूछ लो, बर्बरीक ने पूरा युद्ध देखा, वह बता देगा, किसने युद्ध जीता? सभी बर्बरीक के पास गए फिर कृष्ण भगवान ने पूछा कि तुम बता दो कि युद्ध किसने जीता, तब बर्बरीक ज़ोर से हँसा और बोला- मैंने तो किसी को लड़ते नहीं देखा, मैंने तो सिर्फ यही देखा कि कृष्ण और द्रौपदी युद्ध लड़ रहे हैं। द्रोपदी महाकाली के रूप में लड़ रही थी और कृष्ण का चक्र जहाँ जाता था, वह मर जाता था और द्रौपदी उसका खून पी जाती थी। महाकाली और कृष्ण ने युद्ध लड़ा। तो बर्बरीक को कोई मार ही नहीं सकता था । बर्बरीक का वध संभव ही नहीं था । बर्बरीक से युद्ध में कोई जीत ही नहीं सकता था। बर्बरीक तो महाभारत युद्ध से पहले भीष्म पितामह के पास गया और प्रार्थना की कि मैं भी युद्ध में भागीदार बनूँगा और आप इतने महान आत्मा है, महान पुरुष हैं, मैं चाहता हूँ आप युद्ध न लड़ें क्योंकि मेरी पराजय संभव नहीं है और आप लड़ेंगे तो मारे जायेंगे । तो भीष्म पितामह ने कहा कि पुत्र, मेरी भी पराजय संभव नहीं है । जब तक मैं स्वयं न चाहूँ, तब तक मुझे कोई मार भी नहीं सकता है । हाँ! यह संशय है कि तुम युद्ध लड़ोगे या नहीं, लेकिन यह संशय नहीं है कि मुझे कोई युद्ध में पराजित कर सकता है या मार सकता है, जब तक मैं स्वयं ही मृत्यु का वरण न करूँ, मृत्यु भी मेरी मृत्यु नहीं ला सकती है । महाभारत युद्ध का परिणाम कौन-कौन लोग जानते थे? भीष्म जानते थे, सहदेव जानते थे, कृष्ण जानते थे, तीन लोग ही युद्ध का परिणाम जानते थे।

अश्वत्थामा तो प्रारंभ से लेकर अंत तक युद्ध में रहा, पांडव के पुत्रों की हत्या तो उसी ने की, पर अश्वत्थामा की तो मृत्यु हो ही नहीं सकती थी। जब उत्तरा के गर्भ पर बाण चलाया था, तो उसकी मणि मस्तक से निकाली गई, बस इतना ही हुआ । पर अश्वत्थामा हमेशा डरा रहता है, ठीक है, मैं मरूंगा नहीं लेकिन मेरे हाथ-पैर टूट गये तो मैं क्या करूँगा? वह सबसे बड़ा डरपोक है । यही किस्मत है । भीम का बेटा घटोत्कच भी युद्ध लड़ने आया, जब दुर्योधन ने राक्षस अलमबुश को उतारा युद्ध में लड़ने के लिए, तो कृष्ण ने कहा कि जब ये राक्षस को शामिल कर रहे हैं तो तुम घटोत्कच को बुला लो। लाक्षागृह के बाद जो वनवास हुआ था, उसी समय भीम की शादी राक्षसी पुत्री हिडिंबा से हुई थी, उसको

भीम पसंद आ गए थे, यही तो प्रेम है जो कहीं विकसित हो सकता है। उसी से घटोत्कच पैदा हुआ था, घटोत्कच से बर्बरीक पैदा लिया था, भीम का पोता था बर्बरीक। जहाँ तक अभिमन्यु का प्रश्न है, जब महाभारत युद्ध होने वाला था तो सभी देवताओं ने अपना-अपना अंश दिया था, पर चंद्रदेव अपना अंश देने को तैयार नहीं थे, जब देवताओं ने समझाया तुमको भी अपना अंश देना चाहिए, तो उसने अपने बेटे को भेजा और बोला भगवान कृष्ण से कि यह सिर्फ 16 वर्ष तक आपके साथ रहेगा, आप इसे 16 वर्ष के बाद सुरक्षित और यशस्वी बनाकर निकाल देंगे। तो फिर उसी के अनुसार अभिमन्यु का जीवन रहा। अर्जुन,युधिष्ठिर, द्रौपदी, अभिमन्यु के मरने के बाद विलाप कर रहे थे, उन्हें तो यह मालूम नहीं था कि चंद्रदेव ने 16 साल के लिए ही इसे भेजा है। तो कृष्ण ने कहा- अगर अभिमन्यु की आत्मा की इच्छा हो तो मैं उसे इस शरीर में फिर से ला दूंगा, जब अभिमन्यु की आत्मा से पूछा गया तो उसने कहा कि कौन माता, कौन पिता? ये तो इस शरीर के माता-पिता थे जो पड़ा हुआ था , अब मैं आगे की ओर यात्रा करूँ या फिर पीछे लौट जाऊं? तो कृष्ण भगवान ने कहा कि नहीं-नहीं, आप आगे बढ़ें अपने जीवन में, फिर अभिमन्यु चंद्रदेव के पास लौट गए। हम लोग पूरी बात नहीं जानते तो तरह-तरह के तर्क करते रहते हैं कि अरे अभिमन्यु को तो भगवान कृष्ण भी नहीं बचा पाए। धर्म जानने से सही तत्व खुलता है, जीवन सामाजिक नियमों से नहीं चलता है, जीवन प्राकृतिक नियमों से चलता है। सामाजिक नियम टूटते-बनते रहते हैं पर प्राकृतिक नियम यथावत रहते हैं। प्राकृतिक नियम कर्मानुसार होते हैं। प्रकृति का संविधान है कर्म फल विधान, चाहे देव हो, दानव हो या मानव हो। अगर राम छुपकर बाली को मारते हैं तो अगले अवतार कृष्ण को भी बहेलिया छुपकर तीर मारता है। वैसे कृष्ण को सब पता है, सृष्टि में संतुलन कैसे लाना है, कौरवों के मरने के बाद वो जानबूझकर गांधारी के शिविर में जाकर, गांधारी का श्राप लेते हैं, गांधारी उनको देखते ही क्रोधित हो गई, जैसे मेरा वंश नष्ट हुआ तुम्हारा भी वंश नष्ट होगा। और वैसा ही हुआ द्वारका में उनके सभी वंशज समाप्त हो गये। तो प्रकृति में संतुलन का सिद्धांत है, जिसका पालन कृष्ण ने खुद से किया। महाभारत युद्ध का प्रतिफल तो उन्हें भी इस अवतार रूपी नर शरीर से भोगना था, इसलिए उन्होंने अपना वंश भी नष्ट कराया श्राप को लेकर।

तो जीवन सामाजिक नियमों से नहीं चलता है, जीवन प्राकृतिक नियमों से चलता है, सामाजिक नियम टूटते-बनते रहते हैं, लेकिन प्राकृतिक नियम टूटते-बनते नहीं रहते हैं। प्राकृतिक नियम कर्मानुसार होते हैं। जो कर्म है वही नियम है। सामाजिक नियम को युग-धर्म नहीं कह सकते। जब धर्म को आप युगानुकूल प्रस्तुत करते हैं, कृष्ण भगवान ने अपने समय में समझाया, निष्काम कर्म, कर्म इस तरह से करो कि बंधन का कारण न बने, मतलब आपके आगे का अवरोध खत्म कर दे। आज हम कर्म को ऐसे समझा सकते हैं कि ऐसा कर्म करें जो आपके चित्त को प्रदूषित न करे। ये युग धर्म हुआ। धर्म का तत्व ये हुआ जो आपके हृदय गुफा में ईश्वर के रूप में प्रकाशित है। उसको आप आज के समयानुकूल, युगानुकूल समझाते हैं, बताते हैं, प्रस्तुत करते हैं तो वह युग धर्म होगा। सामाजिक नीति कभी युग धर्म नहीं होता।

अगस्त माह की गतिविधियाँ

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर श्री अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा भगवान शिव दूसरों को सुख देने के लिए स्वयं विष पीने तक से पीछे नहीं हटे। हमें भी भगवान शिव के गुणों को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

आयोजित सत्र में भाग लेते गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे एवं श्रद्धालुगण.....

आयोजित सत्र में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते आमंत्रित अतिथिगण.....

1. अवनी काबरा, जयपुर।
2. मोनिका कुमारी, न्यू कॉलोनी सहरसा।
3. ऋषभ राज , न्यू कॉलोनी सहरसा।
4. ऋषि अग्रवाल, जयपुर।

अगस्त महीने के पहले रविवार को दिनांक: 03/08/2025,(रविवार) को सहरसा जिला में स्थित पशुपालन कॉलोनी में अलग- अलग नए 24 घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया।

साथ ही, पर्यावरण संतुलन एवं शुद्धिकरण हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरित किया गया |

गुरुदेव के सद्विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

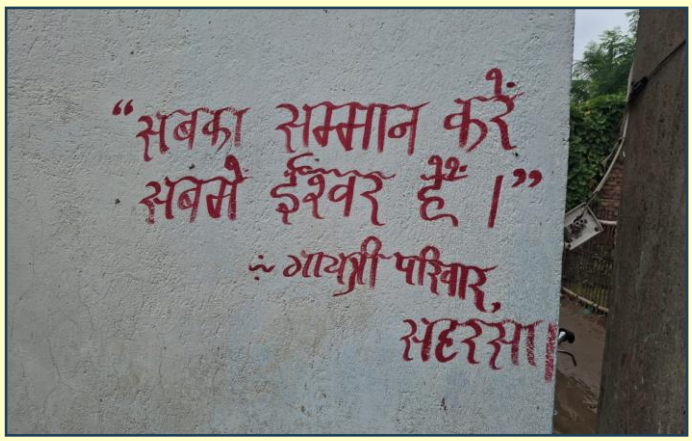

ज़िला स्कूल, सहरसा के 10 विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति, 1978 बैच के पूर्व छात्रों ने की पहल

सहरसा, 5 अगस्त: ज़िला स्कूल सहरसा में एक प्रेरणादायक कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 11वीं और 12वीं के कुल 10 मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। यह छात्रवृत्ति ज़िला स्कूल के 1978 बैच के पूर्व छात्रों के सामूहिक योगदान से दी गई।

इस अवसर पर डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, राकेश कुमार, तुषारकांत झा, रंजीत झा, प्रकाश ठाकुर, संजय कुमार वर्मा और अशोक गुप्ता जैसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्र उपस्थित थे। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि " छोटे शहर में पढ़ाई करना कोई कमी नहीं है। हम सभी ने इसी स्कूल से पढ़ाई की, कठिन परिश्रम किया और अपने-अपने क्षेत्रों में सफल हुए। आज उसी स्कूल में लौटकर अगली पीढ़ी को सहयोग करना हमारे लिए गर्व की बात है।"

कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य ने भी विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा, “जब आप अपने जीवन में सफल हों, तो समाज को लौटाने की यह परंपरा आप भी आगे बढ़ाएं।”

छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में रोशन, शिवशंकर, रजनीश, शिवम, सुशांत, रविकांत, पुष्कर, केशव, गुड्डू और ऋषु शामिल हैं। सभी छात्र इस सम्मान को पाकर बेहद उत्साहित दिखे और अपने उज्जवल भविष्य के लिए संकल्प लिया।

1978 बैच के पूर्व छात्रों ने यह भी संकल्प लिया कि यह छात्रवृत्ति कार्यक्रम हर वर्ष जारी रहेगा, ताकि और भी छात्र इससे लाभान्वित हो सकें। इस पहल ने समाज में शिक्षा और सहयोग की भावना को नया आयाम दिया है।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा — दिनांक 9 अगस्त 2025 को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन बहुत ही उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया गया। इस पर्व के महत्व को बताते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा—रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट प्रेम का पर्व है, लेकिन हम पहले पर्व को समझें—पर्व क्या है, उत्सव क्या है, त्योहार क्या है—उसे जानने की कोशिश करें। जीवन में उत्सव का मतलब 'उल्लास', पर्व का मतलब 'प्रकाश' होता है। हमारा जीवन प्रकाश के उन्मुख हो, इसलिए पर्व मनाते हैं; हमारा जीवन खुशियों से भरा रहे, इसलिए उत्सव मनाते हैं। जब जीवन में प्रकाश और उल्लास मिलता है, तो वह त्योहार हो जाता है। उन्होंने कहा—आज श्रावणी पर्व है—'एकोऽहम् बहुस्यामि' (ब्रह्म की आकांक्षा) का पर्व। आज के दिन भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया था—सृष्टि में ज्ञान और कर्म के उदय का पर्व है—सृष्टि के सृजन का दिन है। ऋषित्व के अभिवर्धन का पर्व, यज्ञोपवीत-नवीनीकरण, प्रायश्चित्त-विधान—यानी दस-स्नान, हेमाद्रि-संकल्प—भाई-बहन के अटूट प्रेम-वृक्ष की रक्षा—रक्षाबंधन का पर्व है; प्रकृति के पोषण, प्रकृति की सहचरिता का पर्व है।

इस अवसर पर ACJM राकेश एवं जज अश्विनी कुमार, राव के डायरेक्टर राकेश कुमार, अमेरिका से आए प्रोफेसर सोनी जी एवं पूर्णिया से आई प्रोफेसर सुषमा जी मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित थे। सबने उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा—यह दिव्य स्थान है; यहाँ आना विशेष है। यहाँ आकर आप मन शांत कर सकते हैं, अंदर से अच्छा महसूस करते हैं; यहाँ आकर पूजा करना विशेष है। कर्मकांड मधु, स्वर्णा और दीप्ति द्वारा कराया गया। इस अवसर पर सामूहिक रूप से वृक्षारोपण किया गया और एक-दूसरे को रक्षा-सूत्र बाँधे गए।

दिनांक 10 .08.2025 (रविवार), गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर श्री अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा कि " क्षमा करना सबसे अच्छा समाधान है , हमें विपरीत परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करने से बचना चाहिए ....."

सत्र में भाग लेते गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे एवं श्रद्धालुगण.....

दिनांक 12 अगस्त 2025 गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई। शान्तिकुंज टोली द्वारा वंदनीय माता जी के जन्म शताब्दी वर्ष 2026 के कार्यक्रम की रूपरेखा बताई गई...

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में दिनांक 14 अगस्त 2025 को पटना उच्च न्यायालय के ऑनरेबल जस्टिस श्री शशि भूषण प्रसाद सिंह अपनी धर्मपत्नी श्रीमती गीता सिंह के साथ निजी यात्रा पर सहरसा आए हुए हैं। उनका स्वागत गायत्री शक्तिपीठ में ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने किया और गायत्री शक्तिपीठ में चल रहे रचनात्मक कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। प्रतिदिन ज़रूरतमंदों को भोजन कराना, बाल संस्कारशाला में झुग्गी-झोंपड़ियों के बच्चों को निःशुल्क नैतिक शिक्षा के साथ-साथ पाठ्यक्रम की शिक्षा देना, एवं शक्तिपीठ में दसवीं तक के बच्चों को मुफ्त में अलग से पढ़ाना; साथ ही गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चों को भी प्रशिक्षित करने की बात डॉक्टर जायसवाल ने बताई, जिसे सुनकर वे बड़े अभिभूत हुए। इस दौरान उन्होंने गायत्री शक्तिपीठ में माँ गायत्री, प्रज्ञेश्वर महादेव की पूजा-अर्चना की। साथ ही उन्होंने योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का भी लाभ उठाया।

दिनांक 17 अगस्त 2025 को गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में जिला की बैठक आयोजित की गई ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल के नेतृत्व में बैठक संपन्न हुई। गायत्री परिजनों को संबोधित करते हुए डॉक्टर जायसवाल ने वार्षिक कार्य योजनाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की...इस बैठक में सभी प्रखंडों के सदस्य शामिल हुए साथ हीं जिला एवं प्रखंड स्तर पर मंदिर कार्यकारिणी समिति, नगरपालिका समिति, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा समिति, युवामंडल, युवतीमंडल, जिला समन्वय समिति, प्रखंड समन्वय समितियों का पुनर्गठन किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में दिनांक 16 अगस्त को जन्माष्टमी बड़े धूमधाम से मनाई गई; उसके महत्व पर बोलते हुए ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि जीवन में 'उत्सव' का अर्थ उल्लास और 'पर्व' का अर्थ प्रकाश है—हमारा जीवन प्रकाश के उन्मुख हो, इसलिए हम पर्व मनाते हैं, और खुशियों से भरा रहे, इसलिए उत्सव मनाते हैं; प्रकाश का कोई दिया जले—बस जीवन प्रकाश के उन्मुख हो। इस अवसर पर ढेर सारे गीत-संगीत के कार्यक्रम हुए और जिले के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

दिनांक 17 अगस्त 2025 को सत्र को डॉक्टर श्री अरुण कुमार जायसवाल जी ने संबोधित करते हुए युवाओं से कहा आज मनुष्य के पास बचा है सिर्फ उसकी उलझन, उसकी व्यथा; उसके भीतर चलने वाला द्वंद्व चिर-शाश्वत है मनुष्य की थाती है। पशु की प्रवृत्ति पाशविक है और ऋषि/देवताओं की प्रकृति दैवी; इस बीच में फँसा मनुष्य न इधर है, न उधर इसीलिए नीत्शे ने कहा कि इंसान दो बिंदुओं को जोड़ता हुआ एक पुल है। उसका अस्तित्व विचारों का है; वास्तव में मनुष्य अपने विचारों का पर्याय है विचार ही उसकी व्यथा और संपदा, विशेषता और विवशता हैं; इन्हीं से उसका दुख उपजता है और इन्हीं के कारण चिंता, तनाव व मनोरोग उत्पन्न होते हैं, पर इन्हीं पर चलकर वह समाधि को भी पा सकता है। दूसरे सत्र में जिला समन्वयक की बैठक हुई, जिसमें 'अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन', 'अखण्ड ज्योति युग निर्माण योजना' और 'प्रज्ञा पाक्षिक' के सदस्यों की संख्या बढ़ाने, संगठन को मज़बूत करने, कार्यकर्ताओं के निर्माण तथा गायत्री एवं यज्ञ पर विस्तृत चर्चा हुई। गायत्री मंत्र के महत्व पर ट्रस्टी डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि गायत्री मंत्र के जप से लौकिक एवं आध्यात्मिक लाभ, सद्बुद्धि एवं आत्मबल, धन-यश और ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है; गायत्री मंत्र 'प्राण-विद्या' है। बैठक में साल भर के कार्यक्रमों पर भी विस्तृत चर्चा हुई, और 'व्यक्तित्व' सत्र में पटना हाई कोर्ट के माननीय जज श्री शशि भूषण सिंह सपत्नीक उपस्थित रहे, जिन्हें मंत्र-दुपट्टा एवं गुरुदेव के साहित्य से सम्मानित किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते डॉक्टर श्री अरुण कुमार जायसवाल जी .....

सत्र में विशेष रूप से आमंत्रित अतिथि स्वरूप माननीय न्यायाधीश श्री शशि भूषण सिंह जी, उच्च न्यायालय, पटना अपने विचारों को साझा करते हुए....

सत्र में उपस्थित गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे एवं श्रद्धालुगण.....

सत्र में आमंत्रित विशेष अतिथिगण माननीय न्यायाधीश श्री शशि भूषण सिंह जी उच्च न्यायालय पटना एवं साथ में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गीता सिंह जी.....

माननीय न्यायमूर्ति श्री शशि भूषण प्रसाद सिंह जी को अपनी पुस्तक जीवन गीता भेंट करते अरुण कुमार जायसवाल

अगस्त महीने के चौथे रविवार, दिनांक 24/08/2025 (रविवार) को सहरसा ज़िले में स्थित गांधी पथ पर विभिन्न 24 नए घरों में देव-स्थापना एवं एक-कुण्डीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन एवं शुद्धिकरण हेतु प्रत्येक घर में पौधे वितरित किए गए। गुरुदेव के सद्विचारों को 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका एवं दीवार-लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया, जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

दिनांक 24 अगस्त 2025 (रविवार), वंदनीय माता जी एवं अखंड दीप की जन्मशताब्दी 2026 के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ, पटना में प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ द्वारा राज्य स्तरीय युवा संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ सहरसा से युवा संयोजक हरीश जायसवाल ने सहरसा ज़िले में चल रही युवा गतिविधियों के बारे में बताया। अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि सभी ज़िलों में कई नवीन रचनात्मक कार्य हो रहे हैं; हम सभी एक-दूसरे से विचार साझा कर, सीखकर अपने-अपने ज़िलों में कार्य कर सकते हैं। हम सभी साथ मिलकर कार्य करें।

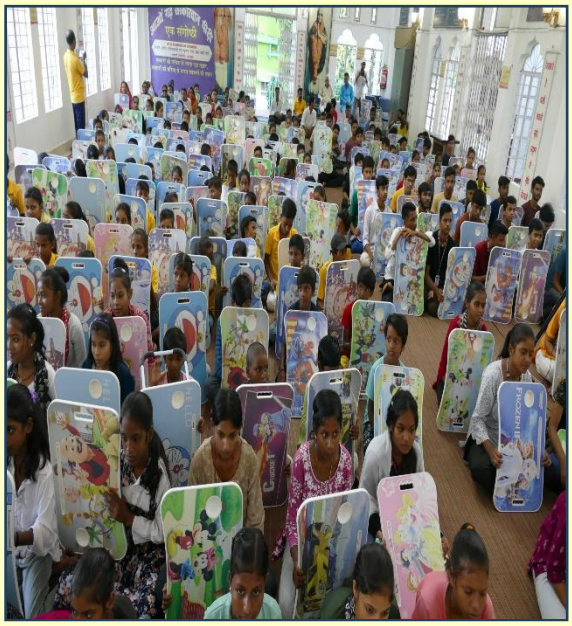

दिनांक 28 अगस्त 2025 (गुरुवार): श्री दिलीप कुमार साबू जी (चेन्नई) के जन्मदिन के अवसर पर उनकी ओर से बाल संस्कारशाला के बच्चे, प्रज्ञा कोचिंग सेंटर के बच्चे, गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे, युवा मंडल, युवती मंडल सहित गायत्री परिवार के अन्य परिजनों के बच्चों के बीच, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में स्टडी टेबलों का वितरण किया गया। सभी ने उनके उज्ज्वल भविष्य एवं दीर्घायु जीवन के लिए प्रार्थना की।

दृष्टि नहीं है तो क्या हुआ....
लेकिन गायत्री परिवार है ना.....
दिशा दिखाने के लिये.....

प्रत्येक दिन की भांति आज दिनांक 30/08/2025 को भी जरूरतमंदों के बीच पुनः देव परिवार गायत्री परिवार सहरसा

सहरसा उप जोन अंतर्गत सभी पांचों जिले में YOUTH EXPO कार्यक्रम होना है। इसके अंतर्गत बेगूसराय, खगड़िया,सहरसा में कार्यक्रम हो चुका है। आगामी कार्यक्रम सुपौल में 13 सितंबर को होनी है। कार्यक्रम को सफल बनाने के निमित्त गायत्री शक्तिपीठ सुपौल में दिनांक 29 अगस्त (शुक्रवार) को युवाओं की बैठक आयोजित की गई, युवाओं को संबोधित करते हुए उप जोन, युवा मंडल के संयोजक हरीश जायसवाल ने कार्यक्रम से पूर्व तैयारी एवं से कार्यक्रम संबंधी महत्वपूर्ण बातें बताई....

अगस्त महीने के अंतिम रविवार, दिनांक 31/08/2025 को सहरसा ज़िले स्थित सिमरी बख्तियारपुर प्रखंड के हिंदूपुर गाँव में 24 अलग-अलग नए घरों में देव-स्थापना, गायत्री यज्ञ एवं संस्कार सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन एवं शुद्धिकरण हेतु प्रत्येक घर में पौधे वितरित किए गए और गर्भोत्सव संस्कार हेतु लोगों को जागरूक किया गया। गुरुदेव के सद्विचारों को 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका एवं दीवार-लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया, जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सदस्य शामिल रहे।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते श्री हरीश कुमार जायसवाल जी .....

सत्र में अपने अनुभवों को साझा करते श्री दिनेश कुमार दिनकर जी....

सत्र में अपने विचारों को साझा करते श्री धीरज कुमार जी .....

इसी कड़ी में आगे अपने विचारों को साझा करते हुए श्री प्रखर कुमार वर्मा जी...

आयोजित सत्र में उपस्थित गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान एवं श्रद्धालुगण.....

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

शिव का सच्चा उपासक बनने के लिए खुद में उतारें उनका गुण

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र संपन्न हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा भगवान शिव दूसरों को सुख देने के लिए विष पीने से भी नहीं हटे। शिव का सच्चा उपासक बनने के लिए उनके गुणों को खुद में उतारें। यानि शिव बने। शिवार्चन के साथ शिव के राह पर चलने का श्रेष्ठ समय सावन है।

कहा कि मान्यता है कि भगवान शिव संसार के समस्त मंगल का मूल है। यजुर्वेद की ऋचा में परमात्मा को शिव शंभू और शंकर के नाम से नमन किया गया है। नमः शिवाय शिव शब्द बहुत छोटा है, परंतु इसके अर्थ इसे गंभीर बना देते हैं। शिव का व्यवहारिक अर्थ है कल्याणकारी। शंभू का अर्थ है मंगलदायक शंकर का अर्थ है अनन्त का श्रोत। यद्यपि तीनों नाम भले ही भिन्न हो, लेकिन तीनों का संकेत कल्याणकारी मंगलदायक आनंदघन परमात्मा की ओर है। ये देवाधिदेव सबके अधिपति महेश्वर सदाशिव हैं। उन्होंने कहा कि शिव त्रिदेवों के अंतर्गत रुद्र नहीं हैं। भगवान शिव की इच्छा से प्रकट रजोगुण रूप ब्रह्मा सतोगुण रूप विष्णु एवं तमोगुण रूप वाले रुद्र हैं, जो क्रमशः सृजन पालन एवं संहार का कार्य करते हैं। ये तीनों वस्तुतः शिव की अभिव्यक्ति हैं। इसलिए शिव से पृथक कारी नहीं है। ब्रह्मा ,विष्णु, महेश तात्विक दृष्टि से एक है। इस मौके पर ऋषि अग्रवाल एवं अवनी क़ावड़ा जयपुर से और ऋषभ राज मोनिका कुमारी उपस्थित थे। सभी ने सत्र को संबोधित करते कहा यहां शांति है।

शिव की राह पर चलने का श्रेष्ठ समय है सावन : डॉ अरुण

सत्र में भाग लेते श्रद्धालु.

□ गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन

प्रतिनिधि, सहरसा.

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भगवान शिव दूसरों को सुख देने के लिए विष पीने से भी नहीं हटे. शिव का सच्चा उपासक बनने के लिए उनके गुणों को खुद में उतारें. उन्होंने कहा कि शिव की राह पर चलने का श्रेष्ठ समय सावन है. मान्यता है कि भगवान शिव संसार के समस्त मंगल का मूल हैं. यजुर्वेद की ऋचा में परमात्मा को शिव शंभु व शंकर के नाम से नमन किया गया है. नमः शिवाय शिव शब्द बहुत छोटा है. लेकिन इसके अर्थ इसे गंभीर बना देते हैं. शिव का व्यवहारिक अर्थ है कल्याणकारी, शंभु का अर्थ है मंगलदायक, शंकर का अर्थ है अनंत का श्रोत. तीनों नाम भले ही भिन्न हो लेकिन तीनों का संकेत कल्याणकारी, मंगलदायक, अनंत परमात्मा की ओर ये देवाधिदेव सबके अधिपति महेश्वर सदाशिव हैं. शिव त्रिदेवों के के तरह रुद्र नहीं हैं. भगवान शिव की इच्छा से प्रकट रजोगुण रूप ब्रह्मा, सतोगुण रुप विष्णु व तमोगुण रूप वाले रुद्र हैं. जो सृजन, पालन व संहार का कार्य करते हैं. ये तीनों वस्तुतः शिव की अभिव्यक्ति हैं. इसलिए शिव से पृथक कारी नहीं हैं. ब्रह्मा, विष्णु, महेश तात्विक दृष्टि से एक हैं. इस अवसर पर ऋषि अग्रवाल, अवनी कावरा जयपुर से व रिषभ राज, मोनिका कुमारी न्यू कॉलोनी से शामिल हुए. सभी ने सत्र को संबोधित करते कहा कि यहां शांति है. यहां का वातावरण बहुत अच्छा है. यहां आकर अच्छा अनुभव हुआ. वहीं गायत्री शक्तिपीठ में नौ अगस्त को रक्षा बंधन एवं हेमाद्रि संकल्प सुबह सात बजे से होगा.

शिव की राह पर चलने का श्रेष्ठ समय है सावन

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ मे व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा भगवान शिव दूसरों को सुख देने के लिए विष पीने से भी नहीं हटे। शिव का सच्चा उपासक बनने के लिए उनके गुणों को खुद मे उतारे यानी शिव बने शिवार्चन के साथ शिव के राह पर चलने का श्रेष्ठ समय सावन है मान्यता है भगवान शिव संसार के समस्त मंगल का मूल है सत्र मे कहा गया 9 अगस्त को रक्षा बंधन एवं हेमाद्रि संकल्प सुबह सात बजे से होगा। इस अवसर पर ऋषि अग्रवाल, अवनी, रिषभ राज, मोनिका कुमारी व अन्य उपस्थित थे।

न्यूज ब्रीफ

शिव के गुणों को खुद में उतारें

सहरसा | रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भगवान शिव दूसरों को सुख देने के लिए विष पीने से भी नहीं हटे। शिव का सच्चा उपासक बनने के लिए उनके गुणों को खुद में उतारें। शिव के राह पर चलने का श्रेष्ठ समय सावन है। मान्यता है भगवान शिव संसार के समस्त मंगल का मूल हैं। नमः शिवाय शिव शब्द बहुत छोटा है पर इसके अर्थ इसे गम्भीर बना देते हैं।

गायत्री शक्तिपीठ में मनाया श्रावणी पर्व व रक्षाबंधन का त्योहार

रक्षाबंधन प्रकृति के पोषण और सहचरी का पर्व : डॉ. अरुण

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में शनिवार को श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन का त्योहार श्रद्धा से मनाया गया। ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि रक्षा बंधन भाई बहन के अटूट प्रेम का पर्व है।

उन्होंने बताया कि उत्सव का मतलब उल्लास एवं पर्व का मतलब प्रकाश होता है। हमारा जीवन प्रकाश की ओर उन्मुख हो, इसलिए पर्व मनाते हैं। हमारा जीवन खुशियों से भरा रहे, इसलिए उत्सव मनाते हैं ।जब जीवन में प्रकाश और उल्लास मिलता है तो वो त्योहार हो जाता है। उन्होंने कहा कि आज श्रावणी पर्व है। एको अहम बहुष्यामी ब्रह्म के आकांक्षा का पर्व है। आज के दिन भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण किया था। यह सृष्टि में ज्ञान और कर्म के उदय का पर्व है । सृष्टि के सृजन का दिन है। रक्षाबंधन का पर्व प्रकृति के पोषण और सहचरी का पर्व है। इस अवसर पर सामूहिक रूप से पौधारोपण एवं एक दूसरे को रक्षा सूत्र बांधे गए।

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते डॉ. अरुण व अन्य।

गायत्री शक्तिपीठ में मनाया श्रावणी पर्व व रक्षाबंधन का त्योहार

रक्षाबंधन प्रकृति के पोषण और सहचरी का पर्व : डॉ. अरुण

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में शनिवार को श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन का त्योहार श्रद्धा से मनाया गया। ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि रक्षा बंधन भाई बहन के अटूट प्रेम का पर्व है।

उन्होंने बताया कि उत्सव का मतलब उल्लास एवं पर्व का मतलब प्रकाश होता है। हमारा जीवन प्रकाश की ओर उन्मुख हो, इसलिए पर्व मनाते हैं। हमारा जीवन खुशियों से भरा रहे, इसलिए उत्सव मनाते हैं ।जब जीवन में प्रकाश और उल्लास मिलता है तो वो त्योहार हो जाता है। उन्होंने कहा कि आज श्रावणी पर्व है। एको अहम बहुष्यामी ब्रह्म के आकांक्षा का पर्व है। आज के दिन भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण किया था। यह सृष्टि में ज्ञान और कर्म के उदय का पर्व है । सृष्टि के सृजन का दिन है। रक्षाबंधन का पर्व प्रकृति के पोषण और सहचरी का पर्व है। इस अवसर पर सामूहिक रूप से पौधारोपण एवं एक दूसरे को रक्षा सूत्र बांधे गए।

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते डॉ. अरुण व अन्य।

भाई-बहन के अटूट प्रेम की रक्षा के लिए है रक्षाबंधन

आरती करते श्रद्धालु.

गायत्री शक्तिपीठ में मनाया गया श्रावणी पर्व

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में शनिवार को श्रावणी पर्व एवं रक्षा बंधन बहुत ही उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया गया. इस पर्व के महत्व को बताते ट्रस्टी डॉ अरुणकुमार जायसवाल ने कहा कि रक्षा बंधन भाई बहन के अटूट प्रेम का पर्व है. लेकिन हम पहले पर्व को समझें पर्व क्या है, उत्सव क्या है, त्योहार क्या है. उसको जानने की कोशिश करें. जीवन में उत्सव का मतलब उल्लास है. पर्व का मतलब प्रकाश होता है. हमारा जीवन प्रकाश के उन्मुख हो, इसलिए पर्व मनाते हैं. हमारा जीवन खुशियों से भरा रहे, इसलिए उत्सव मनाते हैं. जब जीवन में प्रकाश एवं उल्लास मिलता है तो वह त्योहार हो जाता है. उन्होंने कहा आज श्रावणी पर्व है. आज के दिन भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण किया था. सृष्टि में ज्ञान एवं कर्म के उदय का पर्व है. यह सृष्टि के सृजन का दिन है. भाई बहन के अटूट प्रेम के रक्षा के लिए रक्षाबंधन का पर्व है. प्रकृति के पोषण प्रकृति के सहचरी का पर्व है. इस मौके पर एजेसीएम राकेश एवं जज अश्विनी कुमार, राव के डायरेक्टर राकेश कुमार, अमेरिका से आये प्रो सोनी एवं पूर्णिया से आये प्रो सुषमा मुख्य यजमान के रूप में शामिल हुए. सबने मौजूद श्रद्धालुओं को संबोधित करते कहा कि यह दिव्य स्थान है. यहां आना विशेष है. यहां आकर आप मन शांत कर सकते हैं एवं अंदर से अच्छा महसूस करते हैं. कर्मकांड मधु स्वर्णा एवं दीप्ति ने कराया. इस मौके पर सामूहिक रूप से पौधरोपण एवं एक दूसरे को रक्षा सूत्र बांधा गया.

शिवालय में भोलेनाथ का हुआ भव्य शृंगार

संस, सहरसा: सावन के पूर्णिमा के अवसर पर विभिन्न मंदिरों में बाबा भोलेनाथ का भव्य श्रृंगार पूजा किया गया। गायत्री मंदिर स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव और नया बाजार शिव मंदिर में भव्य श्रृंगार पूजा के बाद भजन संध्या का आयोजन किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव की हुई श्रृंगार पूजा • सौजन्यः शक्तिपीठ

वहीं श्रावणी पूर्णिमा के मौके पर गायत्री शक्तिपीठ स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव जी की संध्याकालीन श्रृंगार, भजन एवं आरती के साथ संपन्न हुआ।

दैनिक भास्कर सहरसा 11-08-2025

प्रज्ञेश्वर महादेव की हुई भव्य श्रृंगार पूजा, लगाया गया भोग

भास्कर न्यूज|सहरसा

पवित्र सावन माह की पूर्णिमा अवसर पर शनिवार देर शाम को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव की भव्य श्रृंगार पूजा की गई। इस अवसर पर गायत्री परिवार के लोगों ने प्रज्ञेश्वर महादेव को आकर्षक ढंग से सजाया। भव्य संध्याकालीन आरती हुई। श्रृंगार पूजा के साथ साथ भजन कीर्तन के आयोजन से पूरा परिसर शिवमय हो गया। आरती के महाप्रसाद का वितरण हुआ। पूरे महीने तक गायत्री शक्तिपीठ परिसर स्थित महादेव मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहा।

गायत्री मंत्र से जीवन में मिलेगा संतुलन व सफलता: हरीश

संसू, जागरण • मटिहानी (बेगूसराय): केएल प्लस टू विद्यालय, मटिहानी के सभागार में गायत्री परिवार की ओर से प्रखंड स्तरीय गोष्ठी, युवा सम्मेलन एवं दीप महायज्ञ का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 251 कुंडिया शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ के तहत संपन्न हुआ। वक्ताओं ने कहा कि गायत्री मंत्र के जाप से मन में शांति आती है और परिवार में सुख-समृद्धि का वास होता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान भी जरूरी है। आधुनिक युग में युवा आध्यात्म से दूर होते जा रहे हैं, जबकि यही जीवन को दिशा देता है। सहरसा से आए वक्ता हरीश जी ने कहा कि कंप्यूटर और मोबाइल के युग में चुनौतियां बड़ी हैं, ऐसे में परिस्थितियों को समझते हुए मन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। गायत्री परिवार विश्व समाज के सकारात्मक परिवर्तन के लिए कार्य कर रहा है। मौके पर ब्रजनंदन राय, बालमुकुंद सिंह, ज्ञानचंद, अमित जी, दीपक राय, शंभू राय, कर्पूरी राय आदि मौजूद थे।

प्रखंड स्तरीय गोष्ठी सह युवा सम्मेलन में शामिल युवा • जागरण

पर्वत आसन के लाभ

परिचय :

पर्वतासन या अधो मुख श्वानासन है, जिसमें सांस छोड़कर शरीर को एक उल्टे 'V' आकार में लाया जाता है, जिसमें कूल्हे ऊपर उठाए जाते हैं और एड़ियां ज़मीन पर होती हैं। इस आसन का उद्देश्य रीढ़, हैमस्ट्रिंग (जांघ के पीछे की नसें) और पैरों को खींचना और मजबूत करना है, साथ ही रक्त संचार में सुधार करना भी है।

पर्वतासन (या अधो मुख श्वानासन) करने की विधि :

1. श्वास छोड़ें :

सांस छोड़ते हुए अपने कूल्हों को ऊपर और पीछे उठाएं।

2. V आकार बनाएं:

अपने शरीर को इस प्रकार ऊपर उठाएं कि वह उल्टे 'V' आकार में आ जाए।

3. भुजाएं और पैर सीधे रखें :

अपनी भुजाओं और पैरों को सीधा रखने की कोशिश करें।

4. एड़ियां ज़मीन पर :

अपनी एड़ियों को ज़मीन पर धकेलने का प्रयास करें।

5. सिर और गर्दन को आराम दें :

अपने सिर और गर्दन को आराम दें और नीचे की ओर देखें, जैसे नाभि की ओर।

इसके मुख्य लाभ :

रीढ़ और हैमस्ट्रिंग में खिंचाव आता है।

हाथों और पैरों की मांसपेशियों को मजबूती मिलती है।

शरीर में रक्त संचार बेहतर होता है।

यह पूरी पीठ को खोलने में मदद करता है।

माह अगस्त में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री ऋषि अग्रवाल (जयपुर) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्रीमती अवनी काबरा अग्रवाल (जयपुर) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्री ऋषभ राज (न्यू कॉलोनी) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्रीमती मोनिका कुमारी (न्यू कॉलोनी) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्री राकेश कुमार वर्मा (सेवानिवृत रॉ के डायरेक्टर) - प्राकृतिक चिकित्सा एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र एवं रक्षाबंधन पर्व में भाग लिया।
- श्रीमती सोनी जी (प्रोफेसर, अमेरिका) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र एवं रक्षाबंधन पर्व में भाग लिया।
- श्रीमती सुषमा जी (प्रोफेसर, पूर्णियाँ) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र एवं रक्षाबंधन पर्व में भाग लिया।
- श्री शशि भूषण प्रसाद सिंह (ऑनरेबल जस्टिस, पटना उच्च न्यायालय) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया एवं कृष्ण जन्माष्टमी पूजन के मुख्य अतिथि के रूप में पूजन किया।
- श्रीमती गीता सिंह (पटना) – प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया एवं कृष्ण जन्माष्टमी पूजन के मुख्य अतिथि के रूप में पूजन हेतु सम्मिलित हुए।
- श्री अमित कुमार सिंह (ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्री राकेश कुमार राकेश (स्पेशल जज पॉस्को) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र एवं रक्षाबंधन पर्व में भाग लिया।
- श्री नितेश कुमार (एक्साइज जज, मुंगेर) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्री अश्वनी कुमार (सी जे एम, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र एवं रक्षाबंधन पर्व में भाग लिया।
- श्री संतोष कुमार (एक्साइज जज, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्री विवेक विशाल (एक्साइज जज, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- भावना (साइंटिस्ट Scientist Research On Eye, USA) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- नीता (लीगल एडवाइजर, दिशा गुजरात) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- कांता बेन (दिशा गुजरात) - प्राकृतिक चिकित्सा, शिवाभिषेक, यज्ञ एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम

- 5 सितंबर, शिक्षक दिवस
- 6 सितंबर, अनन्त चतुर्दशी (अनन्त पूजा)
- 7 सितंबर, सहरसा उपजोन की वार्षिक बैठक एवं अखंड ज्योति परिवार समागम
- 17 सितंबर, श्री विश्वकर्मा पूजा
- 21 सितंबर, पितृ पक्ष अमावस्या (सामूहिक श्राद्ध-तर्पण)
- 22 सितंबर, शारदीय नवरात्र आरम्भ (कलश स्थापन)
- प्रत्येक रविवार, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

हे दुर्गा ! तुम आ जाओ

हे दुर्गा ! तुम आ जाओ, जगत् पुकार रहा है
तेरी ही राह माता, कब से वह तक रहा है ।
सृष्टि तुम्हारी देखो, कैसे बिखर रही है
दुष्टों के हाथों से, वह तो उजङ रही है ।।
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ ---------
अब तो तेरी ही माता, जरूरत इस जगत् को
इतनी विषम समस्या, नहीं शक्ति किसी को ।
भूल चुकी यह दुनिया, सद्गुण सदाचार को
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ, दिखा जाओ आचार को ।।
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ ---------
अब नहीं माता हमसे, होती प्रतीक्षा जरा भी
कब से आँखें लगी हैं, तेरे ही आगमन की ।
कब आओगी माता, यह सूचना तो दे दो
हमारी वेदना को माता, अब तो तुम हर जाओ ।।
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ ---------
सुना है गायत्री बनकर, तुम छानेवाली हो
इस जग की दुर्मति को, सन्मति देनेवाली हो ।
ज्ञान सुधा जग को देकर, इसे हर्षानेवाली हो
इस जग की कामधेनु बनकर, पयस पिलानेवाली हो ।।
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ ---------
फिर तो माता तुम आ जाओ, एक सुरसरि बनकर
धारा पवित्र बहा जाओ, इस जग की सरस्वती बनकर ।
यमुना रानी से कह दो, वह भी यहाँ आ जाएँ
ज्ञान-भक्ति-कर्म की सरिता, सबके मनों में बहा जाएँ ।।
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ ---------
मानव मन के अनाचार का, विनाश तुम कर जाओ
हुआ ह्रास जो धर्म का, उसे स्थापित पुनः कर जाओ ।
यदा-यदा हि धर्मस्य का, संकल्प पूर्ण करो तुम
देकर खुशियाँ इस जग को, हे परमेश्वरी हँसो तुम ।।
हे दुर्गा ! तुम आ जाओ ---------

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	**:**	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	**:**	**06478-228787, 9470454241**
Email	**:**	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	**:**	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	**रू**	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA**
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/